सर्वेक्षण दर्पण

वर्ष-2014 अंक 11

महासर्वेक्षक का कार्यालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
देहरादून

सर्वेक्षण दर्पण

वर्ष- 2014 अंक- 11

संरक्षक

डॉ॰ स्वर्ण सुब्बा राव

भारत के महासर्वेक्षक

परामर्श

बी॰ पी॰ नैनवाल

अपर महासर्वेक्षक

संपादक

धूम सिंह

सहायक निदेशक (रा॰भा॰)

संपादन सहयोग

सरोज बलूनी, पूनम काला, के॰ एस॰ नेगी, शान्ति प्रकाश,
जसवीर सिंह, अनुज कुमार

✷ सम्पर्क सूत्र ✷

सहायक निदेशक (रा॰भा॰)

भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग

डाक बाक्स सं॰- 37, हाथीबड़कला एस्टेट देहरादून- 248001 (उत्तराखण्ड)

कृपया इस प्रकाशन के सम्बन्ध में अपने विचार/सुझाव sgo.hindi.soi@gov.in पर भेजें।

हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश

अनुच्छेद-351

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भण्ड़ार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

** ** *

डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव
Dr. SWARNA SUBBA RAO

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय,
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं० 37,
देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड) भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office,
Hathibarkala Estate, Post Box No.-37
Dehradun-248001, (Uttarakhand) India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढाने और अधिकारियों तथा कर्मचारियों की हिन्दी में लिखने की रूचि को विकसित एवं जागृत करने के उद्देश्य से भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देहरादून, गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी हिंदी गृह-पत्रिका सर्वेक्षण दर्पण के 11वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

हिन्दी देश की राजभाषा है और राजभाषा के साथ ही यह हमारी अस्मिता और संस्कृति की संवाहिका भी है इसका जितना अधिक प्रचार-प्रसार होगा उतनी ही राष्टीय एकता मजबूत होगी ।

पत्रिका के संपादक मंडल, इसमें प्रकाशित लेखों के लेखकों एवं प्रकाशन से सम्बद्ध कार्मिकों के साथ-साथ सुधी पाठकों को भी मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ0 स्वर्ण सुब्बा राव)
भारत के महासर्वेक्षक

Tel : 00-91-135-2744268 / 2747051-58 Extn. 4350 E-mail: sgo@sancharnet.in Fax : 00-91-135-2744268 / 2744064

सम्पादकीय

भारत के महासर्वेक्षक कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण दर्पण' इस वर्ष ग्यारहवें पायदान पर पहुंच गई है । इन विगत वर्षों में पत्रिका ने कई सोपान स्थापित किए हैं तथा कई उतार-चढ़ाव के बावजूद पत्रिका की आगे बढ़ने की गति को बल मिला है और पत्रिका प्रतिवर्ष नई-नई जानकारियों के साथ आप सभी पाठकों तक पहुंची है । यह क्षण कार्यालय/विभाग के साथ ही लेखन से जुड़े सभी कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने वाला भी है ।

हमने महसूस किया है कि कई अधिकारी/कर्मचारी वाकपटु होने के साथ-साथ कुशल प्रबन्धन भी करते हैं तथा अपने बोलने की कला से दूसरों को प्रभावित भी करते हैं। परन्तु लिखने में संकोच करते हैं जबकि उनकी लिखने की कला उन्हें एक विशेष पहचान दिला सकती है। ऐसा नहीं है कि सभी लेखक लेखन कला में प्रशिक्षित होते हैं या बहुत अदभुत लिखते हैं अपितु उनके मन में अपने मनोभावों को अपनी भाषा में व्यक्त करने का जज्बा और प्रबल इच्छा शक्ति होती है । जिससे प्रभावित होकर लेखक इस सृजनात्मक कार्य को पूर्णता की ओर ले जाते हैं तथा उनके द्वारा लिखे गए लेख, कविता, कहानियां, यात्रा वृत्तांत, संस्मरण, चुटकुले और संकलन गहरी जानकारी, शिक्षा तथा मनोरंजन से भरपूर होते हैं ।

सम्पादक मण्डल आपकी संवेदनशीलता व रचना धार्मिकता का आदर करते हुए आप सुधी पाठकों के अमूल्य सुझावों तथा मार्गदर्शन की अपेक्षा करता है ताकि आगामी अंक को सजाने-संवारने में आपका महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हो सके ।

धूम सिंह
सहायक निदेशक (रा॰भा॰)

अनुक्रमणिका

क्र॰ सं॰	लेख/रचनाएं	लेखक/रचनाकार	पृष्ठ सं॰
1.	मिजोरम राज्य में विभागीय कार्य (फील्ड़) के दौरान का अनुभव	यू॰एन॰ गुर्जर	1
2.	हिन्दी राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा	ए॰ के॰ सिंह	5
3.	मित्र बनाएं जीवन में खुशहाली लाएं	सुरेश चन्द्र रैगर	7
4.	स्वयं व सामाजिक जीवन में बारम्बार स्मरणीय बिन्दु	सुरेश चन्द्र रैगर	9
5.	'साइलेण्टस्क्रीम' (गूंगी चीख) (कविता)	जय सिंह	10
6.	कबीर युगीन धार्मिक परिवेश एवं उनके चिन्तन	ए॰ के॰ सिंह	12
7.	दीक्षा	सुभाशीष सिन्हा	14
8.	आम आदमी खास आदमी (कविता)	चौधुरी मो॰ आरिफ	16
9.	आलू चरित	बी॰ पात्र	17
10.	ग़ज़लें	डॉ॰ नीलम कुमार बिड़ला	20
11.	सर्वेगीत	अमरदेव बहुगुणा	21
12.	पानी	आनन्द प्रकाश	24
13.	जो बोएगा वही काटेगा	अमित कुमार वर्मा	26
14.	ग़ज़लें	डॉ॰ नीलम कुमार बिड़ला	28
15.	नींद	डॉ॰ एन॰ के॰ तिवारी	29
16.	राजभाषा की उपयोगिता की दृष्टि से हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में विकसित करना आवश्यक है।	अमित कुमार वर्मा	32
17.	आलस्य का त्याग	दिनेश कुमार शर्मा	35
18.	सवेरा/ आसमान पे है खुदा (कविता)	अ॰ डेविड	37
19.	आंशिक दृष्टि ही अज्ञान है ।	सोमबाला	38
20.	तम्बाकू : तथ्यात्मक परिचय	गौरव कुमार आनन्द	39

21.	भारत में लिवइन और विवाह: एक तुलनात्मक विश्लेषण	आबिद अली	41
22.	बेटी (कविता)	जय सिंह	43
23.	'हूक' (कविता)	प्रदीप कुमार वर्मा 'मौजपुरी'	44
24.	एक्सीडेंट	अनिल मेहता	45
25.	बाज की उड़ान और पुनर्स्थापना	जय सिंह	55
26.	यादें (कविता)	अ॰ डेविड	56
27.	नन्हीं-सी लड़की का प्यार	धीरज कुमार श्रीवास्तव	57
28.	चुटकुले	धीरज कुमार श्रीवास्तव	59
29.	विचार-मंथन	संसार सिंह	60
30.	असली ज़रूरत	रामकृष्ण मोरे	62
31.	मातृ-शक्ति	सुस्मिता देव	65
32.	महासर्वेक्षक कार्यालय में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन एक संक्षिप्त रिपोर्ट।	हिन्दी अनुभाग (म॰स॰का॰)	67
33.	रोजमर्रा के कार्यालयीन कार्यों में प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी-हिन्दी वाक्यांश ।	हिन्दी अनुभाग (म॰स॰का॰)	71

000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार

संबंधित लेखकों के निजी विचार हैं।

संपादक मंडल अथवा भारतीय सर्वेक्षण विभाग का

उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000

मिजोरम राज्य में विभागीय कार्य (फील्ड़) के दौरान का अनुभव

श्री यु.एन. गुर्जर,
निदेशक, महाराष्ट्र एवं गोवा भू-स्था0आं केन्द्र ।

सर्वे प्रशिक्षण संस्थान, हैदराबाद(वर्तमान में आई.आई.एस.एम.) से प्रशिक्षण के पश्चात मेरी पहली नियुक्ति 1987 में दल सं0 81 (उत्तर-पूर्वी सर्किल) सिल्चर, असम में हुई थी जिसे वर्तमान में त्रिपुरा, मणिपुर एवं मिजोरम भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र के नाम से जाना जाता है। दल सं0 81 का मुख्यालय सिल्चर था एवं निदेशालय शिलांग में स्थित था और सिल्चर में प्रभारी अधिकारी के मार्फत कार्यालय का कार्य संचालित किया जाता था।

जब मैंने अपने साथियों एवं अन्य कर्मियों को इस स्थान के बारे में पूछा तो सभी के उत्तर अलग-अलग थे। कोई उसे नागालैंड़, मणिपुर, त्रिपुरा में स्थित होने की बात कह रहे थे। उस समय मुझे लगा कि मैं स्वयं एवं अन्य लोग अपने देश के पूर्वोत्तर स्थित प्रदेशों के स्थानों के बारे में बहुत कम जानते हैं। अंत में यह पता लगा कि यह स्थान असम राज्य में स्थित है और हैदराबाद से लगभग 2,500 किलोमीटर की दूरी पर है और वहाँ पहुँचने में लगभग चार दिनों का समय रेलमार्ग द्वारा लगता है, तथा कोलकाता एवं गुवाहाटी से वायुमार्ग द्वारा भी जाने की सुविधा उपलब्ध थी।

अवकाश व्यतीत करने के पश्चात मैं कोलकाता से वायुमार्ग द्वारा सिल्चर पहुंचा तो यह पाया कि यह छोटा शहर है, जिसके पास से बराक नदी गुजरती है और प्रत्येक वर्ष उसमें नियमित बाढ़ आती है। जिससे वहाँ का जनजीवन अस्त-व्यस्त होता है और जीवनावश्यक वस्तुओं के दाम आसमान छूने लगते हैं क्योंकि वहाँ सभी सामान बाहर से आता है। वहाँ मुख्य रूप में बंगाली समुदाय अधिक संख्या में है, इसलिए शहर पर बंगाली संस्कृति की छाप है।

जैसा कि उस समय विभाग में प्रचलित था कि अधिकारियों को भी स्वतंत्र रूप से विभागीय कार्य करना आवश्यक था। इसी परिपेक्ष्य में मुझे भारत-बर्मा (अभी म्यांमार) सीमा की चार 1:50,000 शीटों का 1:25,000 पैमाने पर मॉडल कन्ट्रोल का

कार्य सौंपा गया था। मैं सभी आवश्यक सामान एवं रिकार्ड के साथ अपने गंतव्य की ओर निकल पड़ा, चूंकि यह भू-भाग मेरे लिए पूर्णतः नया था क्योंकि मैं महाराष्ट्र के अमरावती जिले का रहने वाला हूँ, जहाँ की भौगोलिक स्थिति सामान्य है। लेकिन उत्तर-पूर्व की भौगोलिक स्थिति पूर्णतः अलग, ऊंचे-ऊंचे पहाड़, वादियाँ, नदी-नाले, हरे-भरे पेड़ों के घने जंगल, जैसे प्रकृति ने अलग छटा बिछाई हों जिसे देखकर मन को बहुत ही सुखद आनंद मिलता है और प्रकृति का यह दृश्य मनोरम और विहंगम लगता है।

मुझे आवंटित शीटें मिजोरम में पड़ती थी। इसलिए आइजोल होकर पहला पड़ाव चम्पई में रखना पड़ा, जहाँ तहसील मुख्यालय था, उसके दूसरी ओर म्यांमार की सीमाएं थी। दोनों देशों के बीच टियाओ(TIO) नदी है जो इनको विभाजित करती है।

फील्ड कार्य के दौरान एक जगह से दूसरी जगह जाना नियमित होता था। जिसमें स्थानिक लोगों से संपर्क करना अनिवार्य होता था, जैसे- सरपंच, सरकार के अन्य कर्मचारी वे सभी पूर्ण आदर के साथ व्यवहार करते थे और भरपूर सहयोग करते थे।

साधारणतः पूरे मिजोरम में पहाड़ी पर ही क्रमबद्ध तरीके से घर बनाये जाते हैं। भवन लकड़ी के बने होते हैं तथा फर्श भी लकड़ी का ही रहता है। दूर से देखने से यह कतार

में बनी सीढ़ी जैसे लगते हैं, लेकिन अब पहाड़ के किनारों के साथ-साथ पक्के मकान बने हुए हैं। मिझो महिला ही परिवार के सभी कार्य देखती है। मिझो संस्कृति में बाहर से आये मेहमानों का स्वागत लाल चाय(बिना चीनी का) तथा क्वाई (जिसे हम पान कहते हैं) से करते हैं। पान में उबाली हुई सुपारी रहती है। यह पान खाने से, जो नियमित पान का सेवन नहीं करते उन्हें चक्कर आता है। जिनके घर आप गये हैं तो वहाँ चाय और कवाई वे अवश्य देते हैं, जिसे स्वीकार नहीं करने से मिझो लोग अपना अनादर समझते हैं। वैसे मिझो संस्कृति पाश्चिमात्य संस्कृति से मेल खाती है, क्योंकि वहाँ अधिक से अधिक समुदाय ईसाई धर्म के अनुयायी हैं। वे अपने उत्सव बहुत धूमधाम एवं आनंदपूर्वक मनाते हैं और जीवन का भरपूर आनंद लेते हैं। मिझो पुरूष को 'कप्पु' कहते हैं तथा महिला को 'कप्पी' कहा जाता है। मिझो लोग हंसमुख हैं और उनके मन में छल-कपट इत्यादि भावनाएं कभी नहीं देखी जाती है। वे प्रकृति के साथ अपना जीवन जीते हैं, वे बहुत ही आदरातिथ्य स्वभाव के होते हैं और उनसे जितना संभव हो उतनी सहायता करते हैं। जबकि भारत के अन्य भागों में इस संस्कृति का नामोनिशान लगभग नहीं के बराबर है तथा समाज से सामुदायिक/ सामाजिक भावना

लगभग नष्ट सी हो गई है, ऐसा प्रतीत होता है। अपने घर से हज़ारों किलोमीटर दूर, भारत के इस सुदूर सुंदर प्रदेश में इस प्रकार का सौहार्दपूर्ण व्यवहार देखकर बहुत खुशी

की अनुभूति होती थी और घर से दूर रहकर भी स्थानिक लोगों के अपनेपन का व्यवहार ऐसा प्रतीत होता था मानो हम अपने घर में ही हों। अतः मेरा अनुभव रहा है कि मिझो लोग बहुत ही अच्छे, भोले और हमेशा सहायता के लिए तत्पर रहते हैं, जिनके सहयोग से और मेरे साथ कार्य करने वाले सहकर्मियों की सहायता से मैं अपने आंवटित कार्य को पूर्ण कर सका ।

ꕥ ꕥ ꕥ

अगर तुम सच बोलते हो
तो तुम्हे बीती बातें याद रखने की
जरूरत नहीं हैं

मार्क ट्वेन

हिन्दी:- राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा

ए. के. सिंह,
अ.श्रे. लि, महाराष्ट्र एवं गोवा भू-स्था0आं केन्द्र ।

किसी देश के अधिकांश लोगों द्वारा समझी तथा प्रयोग की जाने वाली भाषा राष्ट्रभाषा होती है। राष्ट्रभाषा का सम्मान देश को गरिमा और गौरव प्रदान करता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने राष्ट्रीय भावना से आन्दोलित होकर लिखा है -

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल"

प्रशासन की भाषा या राजकाज चलाने की भाषा अर्थात् भाषा का वह स्वरुप जिसके द्वारा राजकीय कार्य चलाने की सुविधा हो राजभाषा कहलाती है। हिन्दी भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा दोनों है, इसके विविध रुप राष्ट्रभाषा के आधार स्वरुप है। राष्ट्रभाषा के लिए संविधान में मान्यता की अपेक्षा नहीं होती है, यह देश के अधिकांश लोगों की मानसिक स्वीकृति पर प्रतिष्ठित होती है।

हिन्दी के प्राथमिक स्वरुप का विकास उत्तर अपभ्रंशकालीन युग से ग्यारहवीं शताब्दी से हुआ। प्राचीन काल के सिक्कों से यह ज्ञात होता है कि देवनागरी का प्रयोग मुहम्मद गोरी के सिक्कों पर मिलता है। इस संपर्क भाषा का और अधिक विकास तब हुआ जब 13वीं शताब्दी में अलाउद्दीन तथा तुगलक के कारण उत्तर भारत के लोग बडी संख्या में दक्षिण में गये। बाद में प्रशासनिक दृष्टि से अकबर ने मालवा, बरार, खानदेश एवं गुजरात को मिलाकर दक्षिण प्रदेश बनाया। उस समय कुछ मुस्लिम परिवारों के अतिरिक्त शेष सभी व्यापारी एवं श्रमिक सभी जगह खड़ी बोली का प्रयोग करते थे। सिकन्दर लोदी के शासन काल में भी राज्य का हिसाब-किताब हिन्दी में होता था। शेरशाह सूरी के सिक्कों में नागरी तथा फारसी दोनों का उल्लेख मिलता है। जिला स्तर पर आज प्रशासनिक भाषा का जो ढाँचा है, उसकी बहुत कुछ देन मुगल काल की है। मुगलों की राज-काज की भाषा फारसी भले ही ऊपरी तौर पर हो पर चूँकि यह बोल-चाल की भाषा नहीं थी, इसलिए हिन्दी सह-राजभाषा के रुप में विकसित हो रही थी। मराठा प्रशासन में हिन्दी का व्यापक प्रयोग ताम्रपत्र लिखने, राजनीतिक समझौते, सेना प्रशासन में एवं मराठी से हिन्दी अनुवाद में मिलता है। राजस्थान की विभिन्न

रियासतों में तो पूरा पत्राचार हिन्दी में होता था। ग्वालियर नरेश महाराज सयाजी राव सिंधिया ने दिवान शेख गुलाम हुसैन के द्वारा यह 27 नवंबर 1853 को आज्ञा प्रचारित की, कि फारसी शब्दों का प्रयोग करने पर दंड की व्यवस्था की गयी है। राष्ट्रभाषा सदैव लोकभाषा होती है, पर राजभाषा कभी-कभी विदेशी भी हो सकती है। जब भारत में हिन्दू साम्राज्य का पतन हुआ और धर्मांध इस्लाम की विजय पताका के अधीन सारा भारत आ गया तो भारत का सारा राज-काज फारसी में चलने लगा। इसी प्रकार, मुगल साम्राज्य के पतन के बाद अंग्रेजों ने राज-काज अंग्रेजी भाषा में चलाया। साथ ही निजाम के हैदराबाद में उर्दू, पाँड़िचेरी और चंदन नगर में फ्रांसिसी तथा गोवा-दमन पोर्तुगीज भाषा राजभाषा के पद पर बैठायी गई थी।

भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में हिन्दी के साथ - साथ और 14 भाषाओं का उल्लेख किया गया था। ये भाषायें उस समय के 14 राज्यों की अपनी - अपनी प्रादेशिक भाषा हैं। अनुच्छेद 345 के द्वारा राज्यों को आज भी यह अधिकार प्रदान किया गया है कि "राज्य का विधानमंडल उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अनेक या हिन्दी को अपनी राजभाषा के रुप में अंगीकार कर सकता है।" भारतीय संविधान के भाग 5, 6 एवं 17 में राजभाषा संबंधी उपबंध है। राजभाषा का प्रारंभिक उल्लेख अनुच्छेद 343(1) में इस प्रकार किया गया है - "संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी।" भारतीय संविधान में "राजभाषा " शब्द के प्रयोग के अंतर्गत राष्ट्रभाषा हिन्दी, सम्पर्क भाषा हिन्दी और भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यंजना कर सकने वाली भाषा के रुप में हिन्दी का अभिप्राय विद्यमान है। 14 सितंबर 1949 को संविधान में राजभाषा संबंधी भाग स्वीकृत होने पर सभा के अध्यक्ष ड़ॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने कहा - "आज पहली बार हम अपने संविधान में एक भाषा स्वीकार कर रहे हैं जो भारत संघ के प्रशासन की भाषा होगी और जिसे समय के अनुसार अपने आप को ढालना और विकसित करना होगा।"

यह तय है कि भारत की 5 प्रतिशत अंग्रेजी पूरे लोकतंत्र देश का पर्याय नहीं बन सकती। जब तक देश का काम देश की भाषा में नहीं होगा जनता से संबद्ध होना असंभव है।

ꕥ ꕥ ꕥ

मित्र बनाएं जीवन में खुशहाली लाएं

सुरेश चन्द्र रैगर,
प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्थान भू-स्थानिक आं केन्द्र ।

सबसे अधिक प्रशंसनीय बात है कि अपने मित्र के सामने दिल खोलकर रख देने से दो विभिन्न प्रभाव पड़ते हैं- एक तो खुशियां दुगुनी हो जाती हैं और दूसरे दु:ख आधे रह जाते हैं। हम जिन उच्चतम गुणों को प्राप्त कर सकते हैं, उनमें सब से बड़ा गुण हमारी मित्र बनाने की योग्यता है। यदि सामाजिक ढांचे में हम ठीक तरह अपने आपको बिठाने में असमर्थ रहे तो हम सब सुखी नहीं रह सकते, क्योंकि अपने साहस और आत्मविश्वास को सहारा देने के लिए हमें आसानी से मिल सकती है। इसकेअभाव में अकेले या अलग थलग रह जाने पर इस बात का खतरा होता है कि हम स्नायु-रोगी (न्यूराटिक) हो जाए और ऐसी अभागी स्थिति में पहुंच जाए जिसमें निरन्तर दुनिया के खिलाफ बड़बड़ाते रहे।

मनोविज्ञान पर लिखने वाला एक विशेषज्ञ दुनिया के असंख्य दु:खी लोगों का विश्वास प्राप्त कर लेता है । इन लोगों के कष्ट यद्पि एक-दूसरे से भिन्न होते हैं, फिर भी उन्हें तीन मुख्य शीर्षकों के अन्तर्गत रखा जा सकता है -

1) यौन-सबंधी, 2) रोजगार - संबंधी, 3) सामाजिक

कुछ लोग इसलिए दु:खी मिलेंगे कि या तो कोई उपयोगी काम उनके पास नहीं है या अपने काम को वे नापसन्द करते हैं । किन्तु लोगों में बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है, जो दूसरे लोगों से ताल-मेल न रख सकने पर अपने मन में बहुत ज्यादा असंतोष अनुभव करते हैं । ऐसे लोगों की मुख्य कठिनाई यह है कि उनका वास्तव में दोस्त कोई नहीं है ।

बहुतकम ही बातें इतनी दर्दनाक हैं, जितना कि तकलीफों और दु:खों को चुपचाप मंजूर कर लेना । किन्तु यही बहुत ज्यादा लोगों के रूख की विशेषता है । लड़ने के बदले ये लोग घुटने टेक देते हैं । एक-एक कदम रखते हुए ये पीछे हटते जाते हैं, और अपने-आप में खो जाते हैं । अन्त में मित्र बनाने का काम शुरू करना इनके लिए भीषण समस्या बन जाती है, हालांकि शुरू में थोड़ी-सी कोशिश से यह काम किया जा सकता था ।

मित्र बनाने की योग्यता की परिभाषा - दूसरों के संकेत का प्रत्युत्तर देने की शीघ्रता, उनके दृष्टिकोण को समझने की तत्परता तथा उनका काम करने की उत्सुकता के रूप में दी जा सकती है । स्वार्थ और अपने लाभ का बहुत ज्यादा विचार रखना सुखी सामाजिक जीवन के भीषण शत्रु हैं ।

हमें दूसरे लोगों के बीच रहना है । मित्र बनाकर रहना हमारे लिए उतना ही आसान है, जितना आसान बिना मित्र के रहना । शायद मित्र प्राप्त कर लेना अपेक्षाकृत अधिक सुगम है । सारा रहस्य इस बात में छिपा हुआ है कि हम अपने आपको मानवीय इकाईयों की एक बडी भीड़ में एक मानवीय इकाई के रूप में ही देखें। हम सब एक समान ही बुराईयों, भूलों के शिकार हैं । अपने को अलग थलग, सबसे पृथक और कड़वी आलोचनाओं का निरन्तर निशाना बने हुए एक एकाकी इन्सान के रूप में देखना हमारी भूल होगी ।

आप मानें या न मानें, अधिकांश लोग या तो बहुत सुस्त हैं, या बहुत व्यस्त हैं। आपकी आलोचना करने के लिए उनके पास समय नहीं है । जो कीमत आप अपनी लगाते हैं, वे उसको स्वीकार कर लेते हैं ।

यदि आप मित्र बनाना चाहते हैं तो आप पाएंगे कि इस पत्रिका 'सर्वेक्षण दर्पण' में जो सलाह और परामर्श दिये गये हैं, वे आपकी सहायता करेंगे । यह बात तो निश्चित ही है कि ये सलाहें तुरन्त ही करामात या फलदायक सिद्ध नहीं होंगी । अपने और दूसरे लोगों के बीच आपने जो बॉंध खड़े कर दिये हैं, उन्हें दूर करने में कुछ समय और दृढता से कदम बढ़ाने की आवश्यकता है । किन्तु यदि आप बाधाओं और गहरे इन बांधों को तोड़ने का दृढ़ निश्चय कर चुके हों, तो कोई भी रूकावट ऐसी नहीं जो आपके मार्ग में बाधक हो सके । ꕥ ꕥ ꕥ

जब तक इस देश का राजकाज
अपनी भाषा में नहीं चलेगा
तब तक हम यह नहीं कह सकते
कि देश में स्वराज्य है ।

- मोरारजी देसाई

स्वयं व सामाजिक जीवन में बारम्बार स्मरणीय बिन्दु

सुरेश चन्द्र रैगर,
प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्थान भू-स्थानिक आं केन्द्र ।

1 यह न समझिये कि लोग आपको नापसन्द करतें है। अधिकांश लोग हमेशा आपके मित्रता प्रकट करने पर उसका प्रत्युत्तर देंगे ।

2 दूसरे लोग पहले बोलें, इस बात की प्रतीक्षा न कीजिए । उन्हें जानने के लिए आप स्वयं क्रियात्मक कोशिश कीजिए।

3 अपने आपको अलग-अलग एकाकी प्राणी न समझिए। यह भी न समझिए कि आप दूसरे लोगों से जुदा हैं।

4 दूसरे लोगों पर आप क्या असर डाल रहे हैं। इस बात की फिक्र न कीजिए तथा हर एक को खुश करने की सनक भी पैदा न कीजिए ।

5 यदि दूसरे लोग पेचीदा प्रतीत हो तो झुंझलाने या निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं ।

6. लोगों पर अपनी राय लादने की कोशिश न कीजिए । यह कभी न भूलिए कि शायद ये लोग कष्ट में हों या चिंतित हों और आप भी उन्हें पेचीदा प्रतीत हो रहे हों आपको बहुत अधिक न घसीटिए स्वंय से बहुत अधिक आशा न करिए । भूलिए नहीं कि अत्यधिक शारीरिक श्रम से आदमी चिड़चिड़ा हो जाता है और ऐसा करने से जहां तक मित्रता का संबंध है आप स्वंय को पेचीदा व्यक्ति बना लेंगे।

7 किसी अनजान के प्रति भी अशिष्टता या निर्दयता का व्यवहार न कीजिए ।

8 दिल लगाने वाली ऐसी दिलचस्प बातें खोजना न भूलिए जो मित्रता के लिए आपको अवसर प्रदान करें और अत्यधिक निराशा के समय भी कष्टों को सहन करने में आपकी सहायता करें ।

9 किसी भी बातचीत में एकाधिकर जमाने की कोशिश न कीजिए यह न भूलिए कि यदि आप दूसरों को अपनी बात कहने का मौका देंगे तो न केवल लोग आपका साथ चाहेंगे किन्तु वे आपकी बात भी अधिक तत्परता से सुनने को तैयार हो जाएंगे ।

10 सुनी- सुनाई बातों से किसी कि विरूद्ध पहले से राय बना लेने की आदत स्वयं में न पड़ने दीजिए ।

11 दूसरों पर फैसले न दीजिए। यदि किसी के बारे में आप कोई अच्छी बात नहीं कह सकते तो आपके लिए अच्छा है कि आप चुपचाप रहें । कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं और इस सत्य में आप भी शामिल हैं ।

' साइलेण्टस्क्रीम ' (गूंगी चीख)

संकलन जय सिंह,
सर्वेक्षण सहायक,
तकनीकी अनुभाग (म.स.का.)

गर्भस्थ बच्ची की खौफनाक हत्या का आंखों देखा विवरण..........
गर्भ की वह मासूम बच्ची अभी दस सप्ताह की थी
काफी चुस्त थी, हम उसे अपनी मां की कोख में खेलते,
करवट बदलते व अंगूठा चूसते हुए देख रहे थे,
उसके दिल की धड़कनों को भी हम देख पा रहे थे
और वह उस 120 की साधारण गति से धड़क रहा था,
सब कुछ बिलकुल सामान्य था किन्तु जैसे ही
पहले औजार (सक्सन पम्प) ने गर्भाशय की दीवार को छुआ,
वह मासूम बच्ची डर से एकदम घूमकर सिकुड़ गयी
और उसके दिल की धड़कन काफी बढ़ गयी
हालांकि अभी तक किसी औजार ने बच्ची को छुआ तक भी नहीं था
लेकिन उसे अनुभव हो गया था कि
कोई चीज उसके आरामगाह,
उसके सुरक्षित क्षेत्र पर हमला करने का प्रयत्न कर रही है,
हम दहशत से भरे यह देख रहे थे
कि किस तरह वह औजार उस नन्ही मुन्नी मासूम
गुड़िया सी बच्ची के टुकड़े टुकड़े कर रहा था
पहले कमर फिर पैर आदि के टुकड़े ऐसे काटेजा रहे थे
जैसे वह जीवित प्राणी न होकर कोई गाजर मूली हो
और वह बच्ची दर्द से छटपटाती हुई सिकुड़कर
घूम-घूम कर तड़पती हुई इस हत्यारे औजार से बचने का प्रयत्न कर रही थी

वह इस बुरी तरह डर गयी थी
कि एक समय उसके दिल की घड़कन 200 तक पहुंच गयी।
मैंने स्वयं अपनी आंखों से उसको अपना सिर
पीछे झटकते व मुंह खोलकर चीखने
(गूंगी चीख या मूक पुकार) का प्रयत्न करते हूए देखा,
अंत में हमने वह नृशंस व वीभत्स्य दृश्य भी देखा
जब संडासी उसकी खोपड़ी को तोड़ने के लिए तलाश रही थी
और फिर दबाकर उस कठोर खोपड़ी को तोड़ रही थी
क्योंकि सिर का वह भाग बगैर तोड़े
सक्शन टयूब के माध्यम से बाहर नहीं निकाला जा सकता था
हत्या के इस वीभत्स्य खेल को सम्पन्न करने में
करीब पन्द्रह मिनट का समय लगा और
इसके दर्दनाक दृश्य का अनुमान इससे अधिक
और कैसे लगाया जा सकता है कि
जिस डॉक्टर ने यह गर्भपात किया था
और जिसने मात्र कौतूहल वश इसकी फिल्म को देखा
तो वह अपना क्लीनिक व घर बार छोड़कर कहीं चला गया
और फिर वापस नहीं आया
शायद उस हत्यारे डॉक्टर ने किसी अनजाने स्थान पर
आत्मग्लानिवश आत्म हत्या कर ली थी।

दरअसल अमेरिका में सन् 1984 में एक सम्मेलन हूआ था नेशनल राइट्स लाईफ कन्वैनशन, इस सम्मेलन के एक प्रतिनिधि ने डॉ0 बर्नार्ड नेथेनसन द्वारा गर्भपातकी बनायी गयी एक अल्ट्रासाउण्ड फिल्म 'सालेण्टस्क्रीम' (गूंगी चीख) का जो गर्भस्थ बच्ची की हत्या का आंखों देखा विवरण दिया था ।वह आपने अभी पढ़ा है।

<u>अत: गर्भपात करवाना महापाप है</u>

ꕥ ꕥ ꕥ

कबीर युगीन धार्मिक परिवेश एवं उनके चिन्तन

ए. के. सिंह,
अ.श्रे. लि,
महाराष्ट्र एवं गोवा भू-स्था0आं केन्द्र ।

कबीरदास के आविर्भाव से बहुत पहले भारतीय संस्कृति अनेक विदेशी जातियों- शुक, आभीर, खस, हूंण आदि को अपने अंदर समा चुकी थी और इसका मूल कारण यह था कि भारतीय संस्कृति में धर्म साधना व्यक्तिक रही है। यहाँ पर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार धर्म की उपासना को चुनने या करने का अधिकार प्राप्त है। इस्लाम संस्कृति भारतीय समाज संगठन से ठीक विपरीत होने के कारण भारतीय संस्कृति से कभी मिल नहीं पाई। भारतीय समाज में जातिगत विशिषता बनाए रखते हुए धर्म साधना का प्रचलन था। इस्लाम जातिगत विशिष्टता को लोप करके समूहगत धर्म साधना का प्रचारक था एवं मूर्ति पूजा के अनुयायियों को मिटाकर उन्हें अपने धर्म संस्कार में पारंगत करना चाहते थे। ऐसे संकीर्ण मानसिकता वाले कट्टरपंथियों के कारण भारत में समन्वयात्मिकता बुद्धि वाले साधक कुंठित हो उठे। ऐसी परिस्थितियों में कबीरदास का आविर्भाव हुआ। बचपन में किसी भी बच्चे पर माता-पिता जो अपने धर्म, विचार आदि का संस्कार डालते हैं, वे उन्हें नहीं मिले। इसीलिए वे हिन्दू होकर भी हिन्दू नहीं थे और मुसलमान होकर भी सच्चे मुसलमान नहीं थे। वे ऐसे मिलन बिन्दु पर खड़े थे जहाँ से हिंदुत्व, मुसलमानत्व एवं प्रत्येक धर्ममार्ग के गुण-दोष स्पष्ट दिखाई देते हैं।

वे ऐसे पांडित्य को बेकार समझते हैं जो केवल ज्ञान का बोझ ढोने का काम करता है एवं वेदों-पुराणों के ज्ञान को निरर्थक मानते हैं, जो मनुष्य में सच्चे प्रेम की ज्योति नहीं जला सकता। ऐसे वेदांतियों, धर्मग्रंथ के प्रकांडविद्वानों को पंडित नहीं मानते जिसके हृदय में अपनी जाति, कुल, ज्ञान के गर्व के कारण निम्न जातियों, मानव मात्र के प्रति प्रेम का भाव न उत्पन्न हुआ हो -

“पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय
ढ़ाई आखर प्रेम का, पढै सो पंडित होय।।”

इस प्रेम की प्राप्ति के धर्म साधना में उन्होंने हिन्दू और मुसलमान दोनों के पाखंडों का घोर विरोध किया एवं उसे अपनी सच्ची वाणी इस प्रकार प्रहार किया -

1. **कर में तो माला फिरै जीभ फिरै मुख माहिं। ,**
   मनवा तो चहूँ दिसि फिरै, यह तो भक्ति नाहिं।।

2. **पाथ पूजै हरि मिलै तोमैं पूजूँ पहार। ,**
   तातै तो चाकि भली, पीस खाय संसार।।

3. **काँकर पाथर जोरि कै मस्जिद लय बनाय ।**
   ताँ चढि मुल्ला वाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

4. **दिन में तो रोजा रखत हैंरात हनत है गय्या। ,**
   यह तो खून वह बन्दगी, कैसी खुशी खुदाय।।

उस समय विभिन्न संप्रदायों में अनेक प्रकार के अनाचार बाह्य आडंबर आदि प्रविष्ट हो चुके थे। बौद्ध सिद्धों में अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न हो चुकी थी। सरहपा का सहजयान गूह्य - साधना का केंद्र बन गया था और वहाँ मघ् - मैथुन की पूरी स्वतंत्रता थी। कबीर ने अपने समय की समार्जन अवस्था में सुधार करने का बड़ा प्रयत्न किया। उन्होंने अपने समय के धार्मिक पाखंडों का खंडन किया। वे एक ओर जहाँ हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे वहीं दूसरी ओर हिन्दू एवं अन्य समाज में फैली विषमताओं को दूर करने के पक्षधर भी थे। वस्तुतः वे एक आदर्श मानव समाज की स्थापना के लिए आकुल थे।

ꕥ ꕥ ꕥ

मैंने यदि हिन्दी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से केरल के गांव गांव में जाकर भूदान, ग्रामदान का क्रांतिपूर्ण संदेश जनता तक नहीं पहुंचा सकता था ।

- आचार्य विनोबा भावे

दीक्षा

सुभाशीष सिन्हा, अधिकारी सर्वेक्षक
पूर्वोत्तर क्षेत्र का कार्यालय, शिलांग ।

दरसल बात सन् 2004 की है। मुझे भारत के दक्षिणी प्रांत में स्थित केरल राज्य के तिरूअनंतपुरम में पदोन्नति कर तबादलन कर दिया गया। मैं मन ही मन काफी दुखी था क्योंकि अपनों से जुदा होकर घर से इतनी दूर मैं कभी नहीं गया। परन्तु अपने भविष्य की चिन्ता करके मैंने इस पदोन्नति को स्वीकार कर लिया। शिलांग से लगभग 80 घंटे सफर तय करने के बाद समुद्रों के शहर तिरूअनंतपुरम पहुंचा वहां पहुंच कर जब मैंने वहां के स्टाफ का व्यवहार देखा तो बहुत खुश हुआ। सभी लोग काफी मिलनसार थे। मुझे घर से तथा अपनों से दूर होने का तनिक सा भी अहसास नहीं होता था। ऐसा लगता था जैसे मैं अपनों के बीच ही हूं। लेकिन जब आफिस बन्द होने के बाद अपने क्वार्टर में जाता तो फिर वही उदासी और सूनापन मुझे परेशान करने लगाता ऐसा महसूस होता मानो वक्त थम सा गया हो। मैं खोया-खोया सा रहने लगा।

एक दिन की बात है । शाम का वक्त था। रास्ते में टहलते-टहलते अचानक मेरी मुलाकात एक मित्र से हो गई। उसका हालचाल पूछा। बातों का सिलसिला चल पड़ा । अचानक उसने पूछा कि क्या मैं उसके साथ कुन्नुमपाड़ा सुब्राहमयम स्वामी मंदिर जाना पसंन्द करूंगा। मैंने हामी भर दी क्योंकि मेरे पास वक्त काटने के लिए यह अच्छा अवसर जान पड़ा। हम दोनों मंदिर की ओर चल पड़े। शाम का सूरज ढलने ही वाला था। मंदिर एक छोटी सी पहाड़ी पर था जिसके आसपास दूर तक केवल नारियल के पेड़ नजर आ रहे थे। नजर उठाकर देखा तो दूर तक समुंदर (कोवलम बीच) दिखाई दे रहा था । पहली नजर में ही मुझे मंदिर भा गया। बहुत ही सुन्दर था। इसके बाद जब भी समय मिलता मैं उस मंदिर में चला जाता और दो/तीन घन्टे बिताने के बाद वहां से लौट पड़ता। दिल को इससे काफी सुकून मिलता।

एक दिन मैं मंदिर के पास ही एक छोटी सी चट्टान पर बैठा किसी सोच में डूबा हुआ था कि अचानक एक आदमी मेरे करीब आया और वहां की स्थानीय भाषा मलयालम में कुछ कहने लगा। मैं मलयालम भाषा नहीं जानता था। सो मैंने इशारा करके उसे समझाया कि मेरे पल्ले उसकी कोई बात नहीं पड़ रही है। तब उसने आधी हिन्दी और आधी टूटी-फूटी अंग्रेजी में मुझसे पूछा आप इतना मायूस होकर क्यों बैठे हैं। आज आप यहां हो कल कोई और था और आनेवाले समय में कोई और होगा। समय अनमोल होता है और इसे बेवजह जाया मत करो। जो हुआ है, हो रहा है, या आगे होगा, वह सब अच्छा ही होगा। आपके साथ अभी तक जो कुछ हुआ है, हो सकता है आपके साथ इससे भी बुरा हुआ होता। इसलिए अपने आप को दुखी मत करो और अपने आपको सौभाग्यशाली समझो। ईश्वर की ओर से तुम्हें जो कुछ मिलना है, वह सब तो तुम्हें मिल कर ही रहेगा और जो कुछ तुम्हारी तकदीर में नहीं है वह तो तुम्हें कभी भी नहीं मिलेगा। चाहे तुम कितनी भी कोशिश क्यों न कर लो। बस अपने कर्म को सही दिशा में समर्पित करो और दूसरों को दुआ देना। परिस्थितियां चाहे कुछ भी हो अपनी स्थिति पर अटल रहना।

यह बोलकर वह आदमी उठा और क्षण भर में मेरी आंखों से ओझल हो गया। बिना मेरे जबाब का इंतजार किए। उस दिन के बाद मैं हर रोज मंदिर में जाने लगा पर उस साधु का दर्शन दोबारा कभी नहीं हुए। मैं कभी-कभी उसको लोगों की भीड़ में तलाशता पर यह सौभाग्य दोबारा प्राप्त नहीं हुआ। समय बीतता गया। कुछ सालों के बाद मेरा तबादला मेरे होमटाउन में हो गया। आज मैं अपने परिवार के साथ बहुत खुश हूं। पर जाने-अंजाने में आज भी वह साधु बाबा मुझे याद आ जाते हैं और उन्होंने जो बातें मुझसे कही थी मेरे दिल को छू सी गई है और उनकी वाणी मेरे कानों में आज भी गूंजती रहती है।

हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है उसे हम सबको अपनाना है - लालबहादुर शास्त्री

आम आदमी खास आदमी

चौधुरी मो0 आरिफ
तकनीकी विभाग, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

क्या है आम आदमी या खास आदमी
कौन करेगा यह फैसला, हमें हमारा हक चाहिए
हकीकत की दुनिया में हक कहां मिलता
आम का हक तय करते खास आदमी ।
न जाने आम आदमी को कितना भुगतना पडेगा
इस बदलती हुयी दुनिया में कब बदलेगा नियम
हम सब मिलके करें और निर्णय करें कल की दुनिया
हम हैं नये अन्दाज के युवा
क्यों न हम करें आज जो करना है कल
मैं आम आदमी हूं कोई खास नहीं
फिर भी दिल चाहता है कोई खास बनें
किताबों में छपती हैं चाहत के किस्से
हकीकत कि दुनिया में चाहत नहीं है।
जमाने के बाजार में मैं भी हूं।

किसी को किसी की जरुरत नहीं है
जरुरत है सच्चाई की
हमारे चारों तरफ खाली भ्रष्टाचारी हैं।
कैसे बदलेगी यह दुनिया
चलो एक नया समाज बनाएं
जो होगी कल की दुनिया
बनेगी फिर से नयी आशाएं
सफल होगी हमारी कोशिशें नयीं उम्मीदें।

ꕥ ꕥ ꕥ

आलू चरित

बी० पात्र,
अधिकारी सर्वेक्षक,
महासर्वेक्षक का कार्यालय ।

जंगल में भालू, बिहार में लालू एवं सब्जियों में आलू की कहानी बहुत लोकप्रिय है। वास्तव में आलू को कौन नहीं जानता है। मात्र 80-90 साल पहले आलू भारत में अपरिचित था। परन्तु आज आलू सबसे ज्यादा प्रचलित और लोकप्रिय सब्जी है। आलू को एक विदेशी सब्जी कहना यकीन नहीं होता है। आलू भारत में इतना लोकप्रिय हो गया है कि इसके बिना गुजारा करना असंभव हो गया है। हमारे दैनिक खाद्य में बिना आलू में कोई सब्जी बनाना कठिन है। अत: आलू हमारे खाद्य में विशेष भूमिका निभा रहा है। पहले आलू 5 से 10 रूपये प्रति किलो होता था। परन्तु आलू की मांग के साथ-साथ कम उत्पादन के कारण आलू क्रमश: मंहगे हुए हैं। भारत माफिक विषुवीय देश में आलू बिना शीतल भंडार के 2 से 3 महीने के बाद खराब हो जाता है। इसलिए मूल्य वृद्धि होती है। समय-समय पर भारत के कई राज्यों में आलू के दाम 25 से 30 रूपये प्रति किलो हो जाते है। आलू की खेती की कमी, शीतल भंडारण के अभाव एवं व्यापारियों के मुनाफाखोरी इस मूल्य वृद्धि का मुख्य कारण है । मैं इस मशहूर सब्जी के प्रसार, उत्पादन एवं ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को प्रेषित कर रहा हूँ।

आलू के जन्म स्थान के बारे में शोधकर्ता भिन्न-भिन्न पक्ष रखते हैं फिर भी इसमें एक मत है कि आलू की उत्पत्ति पहले दक्षिण अमेरिका के पेरु देश में हुई थी। आज से करीब सात हजार वर्ष पहले दक्षिण अमेरिका के एन्डूंस पर्वतीय क्षेत्र में स्थित मैदानी जंगली भूमि में आलू का संधान पेरु देश वासियों को मिला था एवं वे आलू का खाद्य के रूप में उपयोग करते थे। एन्डूंस पर्वतीय क्षेत्र की मिट्टी अनुर्वर एवं बारिश की कमी के कारण शुष्क है। इसके बावजूद आलू की खेती अच्छी हो रही थी। आलू को छोडकर दूसरी सब्जियां कम दिन में खराब हो जाती है, परन्तु आलू बहुत दिन तक टिकता है इसलिए आलू अन्य सब्जियों की तुलना में अति लोकप्रिय हुआ करता था। परन्तु उस समय अमेरिका दूसरे मुल्कों से अलग-थलग रहने के कारण आलू के बारे में जानकारी अन्य देशों को नहीं हो पायी थी।

यूरोपियन ईस्वी सन् 1400 में उपनिवेश स्थापित करने हेतु दक्षिण अमेरिका में पहुंचे थे। उनका मूल उद्देश्य सोना ढूंढना था। उनको सोना नहीं मिला अपितु वे आलू

लेकर यूरोप वापस पहुंचे थे। आलू को मुख्य खाद्य के रूप में उपयोग करते थे। ईस्वी सन् 1588 तक अंग्रेजों ने आलू देखे नहीं थे। परन्तु जब इंग्लैण्ड पर आक्रमण के लिए स्पेनिश जहाज में आए थे तब वे जहाज में बहुत आलू लाये थे। उक्त युद्ध में जहाज डूबने से पहले-पहले उसमें कई बोरी आलू मिला था। तब अंग्रेजों को आलू के बारे में जानकारी हुई थी। तत्पश्चात् अंग्रेजों ने आलू की खेती की थी। इसके बाद आहिस्ता-आहिस्ता आलू सम्पूर्ण यूरोप में फैल गया। पहले-पहले उसे एक जहरीला पदार्थ मानते थे एवं नहीं खाते थे। बाद में आलू केवल युद्ध बन्दियों को खाने के लिए दिया जाने लगा। ईस्वी सन् 1780 तक संपूर्ण यूरोप में आलू की खेती के संबंध में जानकारी प्रसारित हो गयी थी। आलू सबसे ज्यादा आयरलैण्ड में लोकप्रिय हुआ था। आलू की उपज इतने बडे पैमाने पर होने लगी कि एक एकड जमीन में आलू की खेती के लाभ से पांच सदस्य वाले परिवार का साल भर तक अच्छे से पोषण हो जाता था। इसलिए आयरलैंड के लोग समस्त प्रकार की खेती को छोडकर केवल आलू की खेती करने लगे एवं आलू पर अधिक निर्भर हो गए। कुछ साल बाद उन्हें इस लगाव का कुपरिणाम भोगना पड़ा। किन्हीं कारणवश आलू की खेती में बीमारी फैल गयी। जिसके कारण आलू की फसल संपूर्ण नष्ट हो गयी थी। आलू के अभाव से तब आयरलैण्ड में भूखमरी फैल गयी। इतने लोकप्रिय आलू ने लोगों को पलायन की राह दिखाया। लोगों ने मजबूर होकर अमेरिका की ओर पलायन किया। उधर फ्रांस में बुद्धिजीवियों ने आलू का प्रसार किया था। परसिया ने फ्रांस के आंटोनियो आगष्टाईन पारमेंटियर नामक एक औषध निर्माता को युद्ध बन्दी बनाया था। उनको जेल में आलू को खाद्य के रूप में दिया जाता था। जब वह मुक्त हो कर अपने देश फ्रांस आए तब उन्होंने वहां के किसानों को आलू की खेती करने के लिए उत्साहित किया। परन्तु किसानों ने उनका सुझाव नहीं माना। पारमेंटियर ने उससे निराश न होकर पेरिस नगर की सीमावर्ती क्षेत्र में स्थित करीब 50 एकड अनुर्वर जमीन में आलू की खेती आरम्भ की। उस खेती की देखभाल के लिए कुछ प्रहरी भी नियुक्त किए गए थे। उस खेती को देखने के लिए लोगों में बहुत उत्साह होता था एवं बहुत से दर्शक आते थे। तब वे उन दर्शकों को आलू के बीज उपहार में देते थे। इधर अमेरिका में ईस्वी सन् 1787 के बाद ही आलू लोकप्रिय हुआ था अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा आलू के समर्थन में अपना मत व्यक्त करने के उपरान्त आलू शेष अमेरिका में फला-फूला। तत्पश्चात् आलू अन्य देशों को प्रसरित हुआ था। ईस्वी सन् 1700 में रूस में आलू की खेती करने के लिए सम्राट फ्रेडरिक ने किसानों को निर्देशित किया था। परन्तु आलू की खेती करना धर्म

हानि समझ कर वे नहीं माने थे। ईस्वी सन् 1774 में रूस ने दुर्भिक्ष हुआ था। तब सम्राट ने लोगों के पास आलू मुहैया कराये थे। परन्तु आलू खाने की बात तो दूर इसको छुआ तक नहीं। अंत में सैनिकों ने उन्हें जबरदस्ती आलू खिलाए थे। सर वाल्टर रेज इंग्लैण्ड की महरानी एलिजाबेथ-।। को आलू और आलू के बीज उपहार दिए थे। लेकिन महारानी के सुपकारों (खनसामों) को आलू की सब्जी पकाना नहीं आता था। इसलिए आलू का सब्जी बे-स्वाद हो गया था। अत: आलू को राज महल में वर्जित कर दिया गया था।

फ्रांस के लोगों का यह विश्वास था कि आलू खाने से कुष्ठ रोग होगा। यह आश्चर्य की बात है कि सारे विश्व में जितना आलू का उत्पादन होता है, उसका ज्यादा हिस्सा शराब बनाने में उपयोग किया जाता है। मात्र सब्जी के रूप में कम आलू व्यवहार किया जाता है।

ईस्वी सन् 1600 के अन्त एवं ईस्वी सन् 1700 के प्रारंभ में पुर्तगीज नाविकों के द्वारा आलू दक्षिण एशिया में आया था। तब तक यूरोप में आलू को एक विश्वसनीय खाद्य के रूप में स्वीकार नहीं किया गया था। अत: दक्षिण एशिया में आलू की खेती को ज्यादा महत्व नहीं दिया था। लेकिन उस वक्त भारत में आलू की खेती ज्यादा होने का प्रमाण तत्कालीन एक अंग्रेज भ्रमणकारी एडवार्ड टेरी ने अपने भ्रमण वृत्तांत में उल्लेख किया था। यह उल्लेखनीय है कि अंग्रेज राजदूत सर थोमस रो के साथ एडवार्ड टेरी मुगल सम्राट जंहागीर के दरबार में आये थे। इतिहासकारों को यह कहना है कि एडवार्ड टेरी ने जिस जड को 'पोटाटो' लिखा है वह चीनी आलू है। जो भी हो, भारत में आलू की खेती करने को ब्रिटिश गवर्नर वोरन हेस्टिंग्स ने प्रोत्साहित किया था । पहले-पहले पहाड़ी इलाके में आलू की खेती की जाती थी। बाद में यह अन्य इलाकों में फैल गयी। चूंकि आलू ब्रिटेन से भारत को आया था इसलिए भारत में आलू को 'विलायती आलू' कहते हैं । ईस्वी सन् 1949 में आलू की खेती के शोध के लिए भारत में केन्द्रीय आलू अनवेषण केन्द्र (Central Potato Research Institute) की स्थापना की गई थी । पेरू आलू उत्पादन का प्रारभिक राष्ट्र एवं जन्म भूमि होने के कारण आज वहां विश्व आलू उत्पादन महासंघ का मुख्यालय है और विश्व के विभिन्न देशों में आलू के अनवेषण, उत्पादन एव विपणन हेतु मार्ग दर्शन करता रहता है।

आलू के संबंध में लोगों का अंधविश्वास/विश्वास निम्न प्रकार है :-

1) महिलाओ की गर्भवस्था में आलू खाने से बच्चे का शरीर बड़ा हो जाएगा।

2) जेब में आलू रखने से एक्जिमा ठीक हो जाता है।
3) आलू उपहार देने से बंधुता टूट जाती है।
4) विलियम कार्बेट के अनुसार ज्यादा चावल खाने वाले ऐसे व्यक्ति गांजाखोर हो जाते है वैसे ही ज्यादा आलू खाने से शराबी होने का आसार रहता है।
5) विलियम कार्बेट के अनुसार रूपया और आलू एक जैसी जरूरी चीज है लेकिन ज्यादा होने से यह खराब होती है।

आलू की कुछ विशेषताएं निम्न प्रकार से है-:

1) आलू की सब्जी सबसे उत्तम एवं स्वादिष्ट होती है ।
2) भुने हुए आलू स्वास्थ्य के लिए अच्छा है और खाने में भी स्वादिष्ट होता है।
3) आलू के चिप्स बना कर उसे बहुत दिनों तक रखा जा सकता है। जरूरत समय पर उसे तल कर नमक-मसाला के साथ खाया जाता है।
4) आलू से नमकीन बनायी जाती है एवं बहुत दिन तक संरक्षित की जा सकती है।
5) भारत में व्रत व उपवास में आलू को फलाहार के रूप में उपयोग किया जाता है।
6) अत्यधिक मात्रा में आलू खाने से व्यक्ति मधुमेह की बीमारी का शिकार हो जाता हैं। इसलिए आलू का नियंत्रण से खाना चाहिए।

ग़ज़लें

डॉ० नीलम कुमार बिड़ला
आन्ध्र प्रदेश जी०डी०सी०, हैदराबाद ।

हंस रहे हो आज जिनका आशियाना देखकर
कल जलोगे तुम उन्हीं का चहचहाना देखकर ।

ये तेरी नीयत पे है आज़ाद रख या कैद कर
पंछी यो आयेंगे नित-दिन आबो-दाना देखकर ।

यूँ तो अच्छी बात है दरियादिली भी दोस्तों
लेकिन चलना चाहिए हमको जमाना देखकर ।

दोस्ताना देखकर 'नीलम' शहर में आए थे
इस शहर से जा रहे हैं दोस्ताना देखकर ।

(2)
तराश कर मेरे बाजू उड़ान छोड़ गया
हवा के पास वो खाली कमान छोड़ गया ।

अजीब शख्स था बारिश का रंग देखके भी
खुले दरीचे पे एक फूलदान छोड़ गया ।

जो बादलों से भी मुझको छुपाए रखता था
बढ़ी है धूप तो बेसायबान छोड़ गया ।

न जाने कौन सा भूत इस दिल में बसता था
जो भी ठहरा वो आखिर मकान छोड़ गया ।

है पीछे 'नीलम' समंदर सामने जंगल
किस इंतेहा में तेरा मेहरबान छोड़ गया ।

सर्वेगीत

अमरदेव बहुगुणा
भण्डार सहायक मसका ।

आओ भाई सुनो कहानी,
आओ बच्चों सुनो कहानी,
सर्वेक्षण के काम की,
जिनके बल पर हम जीते है,
जिन्दगी सम्मान की,
वन्देमातरम--- जय-जय सर्वेक्षण 1

सत्रह सौ सड़सठ से हमने,
नये-नये आयाम दिये
हिमालय को नाप के हमने,
जग को नये परिणाम दिये,
अपने ज्ञान की भोर में हमने,
तारों तक को पढ़ डाला,
विशुद्धता क्या होती है यह,
जग के सामने गढ़ डाला,
हमें प्राणों से भी ज्यादा चिन्ता,
मातृ भूमि के मान की,
बन्दे मातरम .....जय-जय सर्वेक्षण 2

तीन कदम में तीन लोक को,
हमने ही तो नापा था,
सर्वेक्षण का हमने ही तो,
जग में खींचा खाका था,
किशन सिंह और नैन सिंह ने,
इसी रीति को अपनाया,
और फिरंगी ने भी इसको,
मुक्त कण्ठ होकर गाया,
खुश होकर के उपाधि दी थी,
पंडित जी के नाम की,
वन्दे मातरम-- जय-जय सर्वेक्षण 3

सर्वे के बल पर ही हमने,
सीमाओं को आंका है
दुःश्मन की हर चाल को हमने,
इसके बल पर भांपा है,
अपनी परवाह करी कभी ना,
बस इंच-इंच को नापा है,
हम हैं वीर सिपाही ऐसे,
जो बात हमारी शान की ,
वन्देमातरम-- जय-जय सर्वेक्षण 4

जितने भी है विभाग देश के,
सर्वे सबका मूल है,
अस्मिता है यही देश की,
यही देश की चूल है,
रहे चूल यदि बलशाली तो,
तो बात बडी अभिमान की,
वन्दे मातरम--- जय-जय सर्वेक्षण 5

सर्वे ही है प्राण देश का
सर्वे देश का मूल है।
जो इसकी अवहेलना करते,
वे करते बडी ही भूल है।
न जमाना उनको माफ करेगा,
चेतावनी मेरे आवाहन की,
वन्दे मातरम---जय-जय सर्वेक्षण 6

सर्वे से ही किसी देश की,
होती निज पहचान है,
सीमाएं भी वहीं सुरक्षित,
जहां सर्वेक्षण का ज्ञान है

भाग्यवान हैं वही देश जो
सर्वे का से महत्व करते,
सही अर्थों में वही देश
मातृ भूमि से ममत्व करते
है मूलभावना यही साथियों
मेरे हर आवाहन की
वन्दे मातरम---जय-जय सर्वेक्षण 7

निज-निज स्तर पर अब हमको,
करना सुफल प्रयास है,
गरिमा बनी रहेगी अपनी,
यह मुझको भी विश्वास है
राम कृष्ण के वंशज हैं हम,
ख्याति जिनके नाम की,
वन्दे मातरम--जय-जय सर्वेक्षण 8,

एक दिवस भी काफी होता,
करने अच्छे काम को,
और आलसी खोता जीवन,
करके बस आराम को,
मेहनतकश नहीं खाता है ,
रोटी कभी हराम की,
वन्दे मातरम--जय-जय सर्वेक्षण 9

भारत मां के वीर पुत्र हम,
सूत्र एक ही मानते,
सत्य अहिंसा के बल पर ही,
आगे बढना जानते,
मन क्रम बचन से रक्षा करते,
पुरुखों के सम्मान की,
वन्देमातरम--- जय-जय सर्वेक्षण 10
राष्ट्रगीत नित गायें हम,
और राष्ट्रगान का गान करें,
कटटरपन से उपर उठकर,
सब धर्मों का मान करें,
सत्य सनातन शिक्षा है यही,
जो पूंजी बहुगुण खान की,
वन्देमातरम-- जय-जय सर्वेक्षण 11

पेटू मरता पेट की खातिर,
नामी मरता नाम को,
निन्दक भी अनुगामी होते,
सभी सराहते काम को,
हमने वह सब कर दिखलाया,
नही चिन्ता की परिणाम की,
वन्देमातरम-- जय-जय सर्वेक्षण 12

लहरायेगा परचम अपना,
वह दिन निश्चित आयेगा,
सर्वेक्षण का नाम जगत में,
सदा अमर हो जायेगा
विश्वगुरु बन जायेंगें हम,
यह इच्छा आम आवाम की,
वन्देमातरम--- जय-जय सर्वेक्षण 13

सभी लक्ष्य को पायेंगे हम
और वन्देमातरम गायेंगे,
जन गण मन का गान करेंगे,
सनमान जगत में पायेंगे,
धन्य हमारे पुरखे हैं,
हम सन्तानें श्रीराम की ,

वन्दे मातरम--जय-जय सर्वेक्षण 14
अमर रहे आजादी अपनी ,
अमर हमारे शोध हों,

नैतिकता भी अमर रहे,
और कर्तब्यों का बोध हो,
सीना गर्व से तना रहे,
हर बात हमारी शान की,
वन्देमातरम--जय-जय सर्वेक्षण 15

बच्चों तुमने सुनी कहानी
सर्वेक्षण के काम की
बन्धु आपने सुनी कहानी,
प्यारे देश महान की,
मेरे भारत देश महान की
इतिहास साक्षी है जिसका
वो कथा आन और बान की
जिसके बल पर हम जीते हैं
जिन्दगी सम्मान की,
वन्देमातरम---जय-जय सर्वेक्षण 16

सब धर्मों की शिक्षा है यही,
है कथा यही उत्थान की,
मातृ भूमि है स्वर्ग से बढकर,
यही सीख है राम की,
धरती मां से प्रेम करें सब,
गीता और कुरान की,
वन्देमातरम--जय-जय सर्वेक्षण 17

आरोग्य सूत्र

1. रात्रि को जल्दी सोना और प्रात: जल्दी जागना (सूर्योदय से पहले) स्वास्थ्य के लिए उत्तम है ।
2. प्रात: काल उठने के बाद कुछ समय इष्टदेव का ध्यान जीवन में प्रसन्नता व शान्ति देता है ।
3. भोजन करते समय मन पूर्णत: शान्त और प्रसन्न रहना चाहिए । सारे दिन में कम से कम भोजन का समय तो मनुष्य को अपने लिए सुरक्षित रखना चाहिए ।
4. मोटापा और पतलापन, दोनों ही अवांछित है, परन्तु मोटापा अपेक्षाकृत अधिक कष्टदायक है, क्योंकि यह अनेक रोगों की जड़ है, इससे सावधान रहने की आवश्यकता है ।

O संकलित

पानी

आनन्द प्रकाश,
कार्यालय अधीक्षक, महासर्वेक्षक का कार्यालय।

हमारा देश जोकि किसी समय में सोने की चिड़िया के नाम से पहचाना जाता था इसका अर्थ यह कतई नहीं लगाया जाना चाहिए कि देश वाकई सोने की चिड़िया था। सही मायनों में हमारे देश को प्रकृति द्वारा प्राकृतिक संसाधन भरपूर मात्रा में प्रदान किये हैं उदाहरण के तौर पर देश में प्रकृति ने नदियों का जाल बिछा दिया है तथा जिसपर विदेशी आक्रातां हमेशा से ही आकर्षित रहें हैं जिस देश को इतनी बड़ी-बड़ी सदाबहार नदियों का उपहार विरासत में मिला हो वह खुशहाल क्यों नहीं होगा यही कारण है कि भारत को किसी समय में सोने की चिड़िया के नाम से पहचाना जाता था जिस कारण देश पर अनेकों बार आक्रमण हुए और जो भी आक्रमणकारी भारत आया वह यहीं का होकर बस गया।

सिक्के का दूसरा पहलू यह है कि देश में प्रत्येक वर्ष वर्षा ऋतु में अत्यधिक बारिश होने के कारण जहां देश के किसी हिस्से में सूखा पड़ रहा होता है तो वहीं दूसरी ओर बाढ़ से लाखों लोग बेघर हो जाते हैं तथा अरबों रूपयों की फसल बरबाद हो जाती है इसके अतिरिक्त इन विकराल बाढ़ों से लाखों मवेशी हर वर्ष मारे जाते हैं तथा जिसकी भरपाई सरकार हर वर्ष अरबों रूपये व्यय करके भी नहीं कर पाती जबकि इस समस्या का स्थाई हल निकालने के लिए किसी को विचार करने का समय ही नहीं होता क्योंकि कुछ लोगों को इन प्राकृतिक आपदाओं के बहाने मोटी कमाई करने का मौका हाथ लग जाता है जोकि वह गंवाना नहीं चाहते। मैं इस लेख के माध्यम से एक संदेश पहुंचाना चाहता हूं कि यदि देश में प्रत्येक वर्ष होने वाली तबाही को कुछ सीमा तक कम करना है तो उदाहरण के लिये यदि अत्यधिक हुई बारिश के पानी का सही उपयोग करना है तो राजस्थान जैसे राज्य की ओर नहरों का निर्माण यमुना नदी से जोड़ कर किया जा सकता है तथा ध्यान देने योग्य बात यह है कि वर्षा ऋतु में जैसा कि लगभग हर वर्ष प्रायः देखा जाता है कि हरियाणा राज्य में यमुना नदी पर बने हथनीकुंड बांध में जब उसकी क्षमता से अधिक पानी आ जाता है तो उस विशाल जलराशि को बांध से छोड़ा जाता है ऐसा करने से देश के दिल्ली जैसे राज्य में बाढ़ का खतरा पैदा हो जाता है ऐसी स्थिति में उस अतिरिक्त जलराशि का पूर्ण रूप से

उपयोग करने के लिए उसे नहरों के जरिये मोड़ा जाना चाहिए । इससे जहां एक ओर बाढ़ से निजात मिलेगी वहीं राजस्थान जैसे राज्य में सिंचाई के साथ-साथ लाखों लोगों की प्यास बुझाने में सहायक होगा तथा देश को वर्षा से प्राप्त होने वाली अपार जलराशि का सही सदुपयोग हो पायेगा ऐसा करके व्यापक स्तर पर तबाही कर व्यर्थ में समुद्र में बह जाने वाले पानी का पूर्ण रूप से बहुउद्देश्य परियोजानाओं में उपयोग कर इस प्राकृतिक आपदा को अभिशाप के स्थान पर वरदान साबित किया जा सकता है तथा इस प्रकार की परियोजनाओं पर किसी राज्य को आपत्ति भी नहीं होगी। पिछली सरकारों द्वारा कुछ नदियों को आपस में जोड़ने का जो कार्यक्रम बनाया है यदि उसमें इस प्रकार के सुझावों को शामिल किया जाता है तो राज्यों के साथ-साथ देश का चहुंमुखी विकास होगा तथा वह दिन दूर नहीं जिस दिन हमारा देश फिर से विश्व में सोने की चिड़िया बन पायेगा।

आरोग्य सूत्र

1. स्वास्थ्य के लिए हितकारी भोजन का सेवन करें ऋतुओं के अनुसार फल, सब्जियां खांए । भोजन भूख से कुछ कम करें।
2. मल त्याग करते समय दांतों को दबाकर या भींच कर रखने से वृद्धावस्था तक भी दांत हिलते नहीं हैं ।
3. दिन में कम से कम आठ दस गिलास पानी अवश्य पियें।
4. भोजन से पूर्व ईश्वर का स्मरण करें। अन्न देने वाले उस प्रभु का धन्यवाद करके भोजन को उसका प्रसाद मान कर ग्रहण करें।
5. मल, मूत्र, छींक आदि के वेगों को कभी न रोकें वेग रोकने से रोग उत्पन्न होने का खतरा बनता है ।

o संकलित

जो बोएगा वही काटेगा

अमित कुमार वर्मा,
प्रवर श्रेणी लिपिक, विधिक अनुभाग ।

एक औरत अपने परिवार के सदस्यों के लिए रोजाना भोजन पकाती थी और एक रोटी वह वहां से... गुजरने वाले किसी भी भूखे के लिए पकाती थी । वह उस रोटी को खिड़की के सहारे रख दिया करती थी जिसे कोई भी ले सकता था । एक कुबड़ा व्यक्ति रोज उस रोटी को ले जाता और बजाय धन्यवाद देने के अपने रस्ते पर चलता हुआ वह कुछ इस तरह बड़बड़ाता "जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा और जो तुम अच्छा करोगे वह तुम तक लौट के आएगा" दिन गुजर तो गए और ये सिलसिला चलता रहा । वो कुबड़ा रोज रोटी लेकर जाता रहा और इन्हीं शब्दों को बडबडाता "जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा और जो तुम अच्छा करोगे वह तुम तक लौट के आएगा" वह औरत उसकी इस हरकत से तंग आ गयी और मन ही मन खुद से कहने लगी कि "कितना अजीब व्यक्ति है, एक शब्द धन्यवाद का तो देता नहीं है और न जाने क्या-क्या बड़बड़ाता रहता है, मतलब क्या है इसका" एक दिन क्रोधित होकर उसने एक निर्णय लिया और बोली" मैं इस कुबड़े से निजात पाकर रहूंगी"। और उसने उस रोटी में जहर मिला दिया जो वह रोज उसके लिए बनाती थी और जैसे ही उसने रोटी को खिड़की पर रखने कि कोशिश कि अचानक उसके हाथ कांपने लगे और रुक गये और वह बोली" हे भगवन मैं ये क्या करने जा रही थी?" और उसने तुरंत उस रोटी को चूल्हे कि आँच में जला दिया। एक ताज़ा रोटी बनायीं और खिड़की के सहारे रख दी, हर रोज कि तरह वह कुबड़ा आया और रोटी लेकर" जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा और जो तुम अच्छा करोगे वह तुम तक लौट के आएगा" बड़बड़ाता हुआ चला गया । इस बात से बिल्कुल बेखबर कि उस महिला के दिमाग में क्या चल रहा है. हर रोज जब वह महिला खिड़की पर रोटी रखती थी तो वह भगवान से अपने पुत्र की सलामती, अच्छी सेहत और घर वापसी के लिए प्रार्थना करती थी जो कि अपने सुन्दर भविष्य के निर्माण के लिए कहीं बाहर गया हुआ था । महीनों से उसकी

कोई खबर नहीं थी। शाम को उसके दरवाजे पर एक दस्तक होती है, वह दरवाजा खोलती है और भोंचक्की रह जाती है, अपने बेटे को अपने सामने खड़ा देखती है। वह पतला और दुबला हो गया था। उसके कपड़े फटे हुए थे और वह भूखा भी था, भूख से वह कमजोर हो गया था। जैसे ही उसने अपनी माँ को देखा, उसने कहा, "माँ, यह एक चमत्कार है कि मैं यहाँ हूँ। जब मैं एक मील दूर था, मैं इतना भूखा था कि मैं मर गया होता, लेकिन तभी एक कुबड़ा वहां से गुज़र रहा था, उसकी नज़र मुझ पर पड़ी और उसने मुझे अपनी गोद में उठा लिया, भूख से मेरे प्राण निकल रहे थे मैंने उससे खाने को कुछ माँगा, उसने नि:संकोच अपनी रोटी मुझे यह कह कर दे दी कि "मैं हर रोज यही खाता हूँ लेकिन आज मुझसे ज्यादा जरुरत इसकी तुम्हें है सो ये लो और अपनी भूख को तृप्त करो". जैसे ही माँ ने उसकी बात सुनी माँ का चेहरा पीला पड़ गया और अपने आप को सँभालने के लिए उसने दरवाजे का सहारा लिया। उसके मस्तिष्क में वह बात घूमने लगी कि कैसे उसने सुबह रोटी में जहर मिलाया था. अगर उसने वह रोटी आग में जला के नष्ट नहीं की होती तो उसका बेटा उस रोटी को खा लेता और अंजाम होता उसकी मौत और इसके बाद उसे उन शब्दों का मतलब बिल्कुल स्पष्ट हो चुका था" जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा और जो तुम अच्छा करोगे वह तुम तक लौट के आएगा।

"निष्कर्ष"

हमेशा अच्छा करो और अच्छा करने से अपने आप को कभी मत रोको फिर चाहे उसके लिए उस समय आपकी सराहना या प्रशंसा हो या न हो ꙮ ꙮ ꙮ

हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया ।

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद

ग़ज़लें

डॉ० नीलम कुमार बिड़ला,
आन्ध्र प्रदेश जी०डी०सी०, हैदराबाद ।

किश्त दर किश्त कोई कहर शेष है
फिर परलय की घड़ी का गज़र शेष है ।
सभ्यता की इमारत दरकने लगी ।
कल कहा जाएगा खंडहर शेष है ।
सारा अमृत सियासत हज़म कर गई
अब तो हर ओर केवल ज़हर शेष है ।
यूँ तो उम्मीद का ज्वार थम सा गया
फिर भी लगता है कोई लहर शेष है ।
उठ रहा धूआं जल रही बस्तियॉ
न परेशान हैं कि मेरा घर शेष है ।
छल-कपट और दशहत के इस दौर में
किससे पूछें 'नीलम' कितनी उमर शेष है ।

(2)
पत्थरों के करीब आइना रख दिया
एक टूटा तो दूसरा रख दिया ।
दिल को खाली न होने दिया गम से
जब पुराना हुआ तो नया रख दिया ।
जाने अब किस घड़ी याद उतरे तेरी
ख्वाब की सीढियों में एक दिया रख दिया ।
एक दिन तुझको घर लौट आना है
हमने यूँ ही नहीं दर खुला रख दिया ।
अपनी ख्वाहिश में 'नीलम' खुद को कई खत लिखे
उनको खोला, पढ़ा, तह किया और रख दिया ।

नींद

डॉ0 एन0 के0 तिवारी,
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून।

यह एक प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक आवश्यकता है तथा मनोविज्ञान की भाषा में यह एक प्रकार का अन्तर्नोद है । नींद की अवस्था में शरीर शिथिल हो जाता है तथा मस्तिष्क विश्राम की अवस्था में रहता है । अर्थात् मेटाबोलिज्म की दर निंद्रा की अवस्था में न्यूनतम हो जाती है । मांसपेशियों में शिथिलता आ जाती है तथा शरीर बाहरी वातावरण में होने वाली किसी भी घटना के प्रति संवेदन-हीन हो जाता है। एक नवजात शिशु भी अपना आहार ग्रहण करने के उपरान्त नींद लेता है । इस भाग-दौड़ भरी जिंदगी में प्रत्येक व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु दिन-रात कड़ी मेहनत करता है तथा मेहनत के पश्चात् अपने को पुनः ताजा करने के लिये नींद लेता है । नींद एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए इतनी आवश्यक है कि डॉक्टर भी मरीज को पर्याप्त नींद लेने हेतु दवाईयां तथा इंजेक्शन देते हैं ताकि मरीज शीघ्र ठीक हो सके। गाड़ी चलाते समय कई बार नींद आ जाने के कारण सड़क दुर्घटनाएं हो जाती हैं जिससे भारी जान-माल की क्षति होती है । अतः मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के लिए नींद आवश्यक है । दूसरी ओर नींद न आने के कारण विभिन्न प्रकार के शारीरिक व मानसिक रोगों की उत्पत्ति होती है । इनमें मुख्यतया अवसाद, अनिंद्रा **(insomnia)**, कब्ज, थकान, सिर दर्द आदि हैं ।

विभिन्न प्रकार के शोधों से यह तथ्य प्राप्त हुए हैं कि नींद न आने के कई कारण हैं जैसे, मानसिक तनाव, गरिष्ठ भोजन, रात्रि की शिफ्ट में कार्य करने के कारण, जिसके अन्तर्गत शरीर में सेरोटोनिन का स्तर कम हो जाता है । वास्तव में सेरोटोनिन एक प्रकार का हार्मोन है जिसका कार्य नींद को नियमित करना होता है । इसके अतिरिक्त महिलाओं में नींद न आने के कारणों में मुख्यतयाः मेनोपोज (मासिक धर्म का बंद होना) सेरोटोनिन मासिक धर्म, और गर्भावस्था है । नेशनल स्लीप फाउंडेशन के शोध के अनुसार 40 प्रतिशत महिलाएं मासिक धर्म एवं मेनोपोज के दौरान नींद न

आने की समस्या से प्रभावित होती हैं । अन्य कारणों में अत्याधिक शराब का सेवन, अत्यधिक मिठाई एवं चॉकलेटों का सेवन, मांस-मछली तथा कुछ सब्जियों (जैसे- प्याज, गोभी, ब्रोंकोली आदि) के सेवन से अनिद्रा रोग की उत्पत्ति होती है ।

नींद से संबंधित कुछ अन्य शब्द हैं जैसे - हिप्नोटिज्म (सम्मोहन) एवं समाधि। इन शब्दों को भी जानना आवश्यक हैं सम्मोहन की प्रक्रिया में सम्मोहनकर्ता पात्र को कृत्रिम रूप से निद्रा की अवस्था में लाकर अपने आदेश से शारीरिक व मानसिक विकारों की चिकित्सा करता है । दूसरी ओर ''समाधि'' शब्द भी योग शास्त्र में काफी प्रचलित है । ''समाधि'' की अवस्था में साधक अपना पूरा ध्यान एक बिंदु पर केंद्रित कर लेता है तथा बाहरी व्यक्ति को साधक निंद्रा की अवस्था में दिखायी देता है । यह प्रक्रिया भी मस्तिष्क की धारण-शक्ति तथा आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ा कर स्मृति को बढ़ाता है । तीसरा शब्द जोकि निंद्रा से संबंधित है वह है ''स्वप्न'' । स्वप्न भी निंद्रा की अवस्था में आते हैं । मनोवैज्ञानिकों के अनुसार **"Dreams are royal road to the unconscious"** अर्थात् किसी व्यक्ति के अवचेतन को जानने के लिये उसके द्वारा देखे गये स्वप्नों की बड़ी भूमिका होती है । अर्थात् स्वप्नों द्वारा किसी व्यक्ति के अवचेतन मन को जानकर मनोचिकित्सक मानसिक रोगों का उपचार करता है । इस संदर्भ में प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्रायड का कार्य सराहनीय है उन्होंने सन् 1900 में एक पुस्तक लिखी थी जिसका नाम **"Inter pretation of Dreams"** था । इस पुस्तक में उन्होंने स्वप्न के आधार पर मनोरोग के इलाज के बारे में विस्तृत उल्लेख किया है । ऐसी मान्यता है कि व्यक्ति अपनी अधूरी इच्छाओं की पूर्ति स्वप्न में करता है ।

पर्याप्त नींद लाने के लिए शारीरिक एवं मानसिक व्यायाम जरूरी हैं जिसके अन्तर्गत समय से उठना, व्यायाम करना, योगा अभ्यास तथा पठन-पाठन आदि को दैनिक जीवन में सुनिश्चित करना होगा । इसके अतिरिक्त कभी-कभी गंभीर बिमारियों के कारण भी नींद नहीं आती है । इसके लिए योग्य चिकित्सक से सलाह तथा दवा लेना आवश्यक है । नींद समय से लाने के लिए सात्विक भोजन तथा सादा जीवन आवश्यक है । इसके अतिरिक्त यदि किसी मानसिक उलझन के कारण चिंता, तनाव व अवसाद है तो अपनी समस्या अपने किसी विश्वास-पात्र से शेयर करना चाहिए ।

अत्यधिक शराब का सेवन भी अनिद्रा का कारण बन जाता है । व्यक्ति को अपने जीवन में लक्ष्य अपनी मानसिक व शारीरिक क्षमतानुसार निर्धारित करने चाहिए ताकि विपरीत परिस्थितियां तनाव का कारण न बने ।

नींद का भूख से सहसंबंध है । शिकागो विश्वविद्यालय में किये गये एक शोध के अनुसार यदि कोई व्यक्ति सात घंटे से कम सोता है तो उसकी भूख बढ़ जाती है । अतः यदि कोई अपनी भूख को कम करना चाहता है तो उसे सात घंटे की नींद लेना आवश्यक है । दूसरी ओर हैलसिंकी विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं के अनुसार नींद को मापने की आसान एवं सहज प्रौद्योगिकी की खोज नींद की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक हो सकती है । इस नई प्रौद्योगिकी में एक लचीला फिल्म संवेदी उपकरण आपके बिस्तर पर लगा दिया जाता है तथा इसके द्वारा सोने वाले की हरकतों जैसे दिल की धड़कन तथा सांस की गति को मापा जाता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त नींद से संबंधित बहुत सारे अनसुलझे प्रश्न हैं जिनके उत्तरों को पाने के लिए एक अच्छा प्लेटफार्म चाहिए । इसके लिए अलग से एक विश्वविद्यालय होना चाहिए जो कि नींद, शरीर व मन पर क्या प्रभाव डालती है, कितने घंटे की नींद शरीर और मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक है, विभिन्न आयु-समूहों के व्यक्तियों को कितने घंटे की नींद की आवश्यकता होगी, शरीर में होनी वाली मेटाबोलिज्म की दर पर नींद का क्या प्रभाव पड़ता है, इसके अतिरिक्त नींद का शरीर के अंदर होने वाली क्रियाओं (शरीर क्रिया विज्ञान) पर क्या प्रभाव पड़ता है, विभिन्न प्रकार की नींद की दवाईयों का शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है, नींद लाने के लिए कैसा वातावरण चाहिए तथा नींद के लिए उपयुक्त तापमान कितना होना चाहिए आदि विषयों पर वैज्ञानिक तरीके प्रयोग किये जाने चाहिए तथा प्राप्त तथ्यों का उपयोग मानव-जाति के उत्थान के लिए होना चाहिए ।

राजभाषा की उपयोगिता की दृष्टि से हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में विकसित करना आवश्यक है ।

अमित कुमार वर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक, विधिक अनुभाग (म०स०का०)

भाषा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की भाषा धातु से हुई है जिसका अर्थ होता है - वाणी की अभिव्यक्ति । अतः भाषा से तात्पर्य विचारों के ऐसे आदान-प्रदान से है जिसको हम आसानी से एक दूसरे तक पहुँचा सके । संसार में कुल मिलाकर लगभग अट्ठाईस सौ भाषाएं हैं, जिनमें तेरह ऐसी भाषाएं हैं, जिनके बोलने वालों की संख्या साठ करोड़ से अधिक है । संसार की भाषाओं में हिन्दी भाषा को प्रथम पांच में स्थान प्राप्त है । भारत के बाहर (बर्मा, लंका, मॉरिशस, ट्रिनिडाड, फिजी, मलाया, सुरीनाम, दक्षिण और पूर्वी अफ्रीका) भी हिन्दी बोलने वालों की संख्या काफी अधिक है । हिन्दी एशिया महाद्वीप की एकमात्र ऐसी भाषा है जो अपने देश के बाहर भी बोली जाती है । हिन्दी एक जीवित और सशक्त भाषा है । हिन्दी एक सरल और सुगम भाषा है, जिसके कारण इसका प्रचार-प्रसार देश के कोने-कोने में हो रहा है ।यह देश की सांस्कृतिक एकता, लोकचेतना एवं सामाजिक सम्पर्क की भाषा है ।

भारत वर्ष विविध संस्कृतियों एवं रीति-रिवाजों वाला देश है जहां कई प्रकार की भाषायें तथा बोलियाँ हैं । कहा जाता है कि हर इक्कीस कोस पर पानी तथा बोली बदल जाती है । जब प्रथम स्वाधीनता संग्राम हुआ तो संदेशों के संचार के लिये ऐसी भाषा की आवश्यकता हुई जो आम जन-मानस की समझ में आसानी से आ जाये । चूंकि हिन्दी भारत के अधिकाधिक प्रांतों तथा 70 फीसदी से अधिक आबादी द्वारा बोली एवं समझी जाती है । अतः इस प्रयोजन के लिये हिन्दी का चुनाव किया गया । हिन्दी युगों-युगों से विचार-विनिमय का एक सशक्त माध्यम रही है । हिन्दी की सरलता एवं सुगमता ही इसके प्रचार एवं प्रसार का प्रमुख कारण बन गई । व्यापक राष्ट्र-हित, राष्ट्रीय एकता तथा जन-सम्पर्क को दृष्टिगत रखते हुये पराधीन भारत में जितने भी शिक्षा आयोगों का गठन किया गया उन पर हिन्दी को शिक्षा का माध्यम एवं राज-काज की भाषा बनाने का जोर हमारे पूर्वजों द्वारा दिया गया । लेकिन अंग्रेजी शासन को शायद यह मंजूर नहीं था । इसलिए अंग्रेज तो चले गये लेकिन अंग्रेजी छोड़

गये । उनका लक्ष्य हमारी मानसिकता को पराधीन करना था और शायद कुछ हद तक वो इसमें सफल भी रहे । देश स्वतंत्र हुआ और स्वाधीन भारत के संविधान में हिन्दी को राज भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है ।

हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिये संसद द्वारा राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया । इसी अनुक्रम में राजभाषा संकल्प द्वारा संसद के दोनों सदनों द्वारा यह संकल्प लिया गया कि हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए इसके उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जायेगा और उसे कार्यान्वित किया जायेगा और किये जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद के दोनों सभाओं के पटल पर रखी जायेगी । राजभाषा नियम के अन्तर्गत देश के प्रांतों को 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्रों में बांटकर हिंदी में काम-काज को बढ़ावा देना सुनिश्चित किया गया तथा सभी प्रकार के सरकारी दस्तावेजों का हिन्दी में होना अनिवार्य किया गया ।

जब हम बात करते हैं राजभाषा की उपयोगिता की तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कम से कम केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में तो हिन्दी में काम-काज का प्रतिशत दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है तथा यह अपने उत्थान की ओर अग्रसर है । लेकिन हर नेक काम में कुछ अड़चनें होती हैं वैसे ही राजभाषा के मार्ग में भी सबसे बड़ी अड़चन संपर्क भाषा के रूप में है । क्योंकि हमारे देश में हिन्दी को संपर्क भाषा का संवैधानिक दर्जा नहीं प्राप्त है । कई बार ऐसा होता है कि हमें किसी अन्य भाषा में पत्र या प्रतिवेदन प्राप्त होता हैं जिसका उत्तर हमें उसी भाषा में देना होता है । अतः यह जरूरी है कि यदि हमें राजभाषा के प्रयोग एवं उसकी उपयोगिता को सुनिश्चित करना है तो हमें संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का भी विकास करना होगा क्योंकि राजभाषा और संपर्क भाषा दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है ।

हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में विकसित करने के लिये हमें हिन्दी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके अंग्रेजी को एक विषय के रूप में पढ़ना होगा न कि अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके हिन्दी को एक विषय के रूप में । ऐसा नहीं है कि हिन्दी

माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वालों को जीवन में सफलता नहीं मिलती । बहुत से ऐसे उदाहरण हे जिन्होंने हिंन्दी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके ऊंचा पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की । वर्तमान में सिविल सेवाओं में हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों की सफलता का प्रतिशत बढ़ा है ।

हम अंग्रेजी को प्रभावी समझते हैं जबकि सत्य तो यह है कि हिन्दी से ज्यादा सरल और प्रभावी भाषा विश्व में कोई नहीं है । हमें अपनी मानसिकता बदलने की आवश्यकता है । क्योंकि हम ही अपनी भाषा को आगे ले जा सकते हैं कोई दूसरा हमारी मदद क्यों करेगा । हमें हिन्दी को आत्मसात करना होगा । हमें हिंदी को अपनाने के लिये प्रतिबद्ध होना होगा। हमें हिन्दी के प्रयोग को हीन भावना न समझकर उसे स्वयं तथा देश के गौरव एवं सम्मान का सूचक बनाना होगा । हमें अपने पूर्वजों से शिक्षा लेते हुए स्वयं तथा अपनी आने वाली संतानों को हिन्दी को अपनी प्रमुख भाषा बनाने के लिये प्रेरित करना होगा। आज विश्व के कई विश्वविद्यालयों द्वारा हिन्दी को एक विषय के रूप में अपने पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है । ऐसा दो कारणों से हो रहा है एक तो वो हिन्दी का रसपान करना चाह रहे हैं और दूसरा जो कि मुख्य कारण है वह यह है कि वह भारत के साथ अपने संबंधों तथा व्यापार को बढ़ाने के लिये हिन्दी को माध्यम के रूप में प्रयोग कर रहे हैं । हमारी सरकार को भी ऐसी नीतियों का निर्माण करना होगा जिससे हम हिन्दी को देश की संपर्क भाषा के रूप में विकसित कर सकें क्योंकि तभी राजभाषा की उपयोगिता सिद्ध हो सकती है ।

> देश की भाषा को अपनाए बिना समृद्धि नहीं ।
>
> \- महादेवी वर्मा

आलस्य का त्याग

दिनेश कुमार शर्मा,
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर, उत्तरी मुद्रण वर्ग।

आपने कहानी सुनी होगी बचपन में हर व्यक्ति ने इसे पढ़ा भी होगा किन्तु मैं इसे कुछ और जोड़कर बताना चाहता हूं।

किसी पेड़ पर एक कौआ तथा एक गिलहरी रहते थे। एक बार गिलहरी ने कौए से कहा-चलो हम दोनों खेती करते हैं मैं हल चलाउंगी तुम बीज बोते रहना । मैं निराई करूंगी तुम पानी देते रहना। मैं फसल की कटाई करूंगी तुम रोज इसे घर तक ढोना। कौए को यह बात पसन्द आ गई । परन्तु जिस दिन खेती का काम शुरू करना था उसी दिन कौए को कहीं से रोटी का एक टुकड़ा मिल गया। गिलहरी ने कौए को काम के लिए बुलाया तो कौए ने उसे सुनाया।

तू चल मैं आता हूं चुपड़ी रोटी खाता हूं।
हरी डाल पर बैठा हूं ठंडा पानी पीता हूं।

गिलहरी ने कुछ देर इन्तजार किया किन्तु कौआ नहीं आया। गिलहरी ने अकेले ही निराई बुवाई का काम कर दिया और आलसी कौआ बैठा रहा । जब पानी देने का वक्त आया तब भी गिलहरी ने कौए को बुलाया उस दिन कौए के पास रोटी का टुकड़ा भी नहीं था । किन्तु उसे वही पुराना गीत गाने की आदत पड़ गई थी और उस दिन भी वही गीत सुना दिया । फसल की कटाई के समय भी उसने रटा रटाया जवाब दे दिया। गिलहरी सारा अनाज घर ले आई । गिलहरी मजे से रोज अपना अनाज खाती और आराम से जीवन व्यतीत कर रही थी। लेकिन कौए को रोज दौड़ लगानी पड़ती और अधिकतर उसे भूखा रहना पड़ता ।पर कहने के लिए वही गीत दोहराता रहता।

कई दिनों के बाद उसे रोटी का एक टुकड़ा मिला और वह उसे लेकर डाल पर बैठा ही था कि एक लोमड़ी की नजर कौए पर पड़ी लोमड़ी कौए की फिदरत जानती थी। इसलिए बड़े भोलेपन के साथ वह कौए के नजदीक जाकर बोली कौए भाई तुम कितना अच्छा गीत गाते हो । आज मुझे फिर से वही गीत सुना दो ना । रोटी का टुकड़ा पाकर मगन कौए ने जैसे ही गीत गाने के लिए मुंह खोला रोटी का टुकड़ा उसकी चोंच से नीचे गिर गया और लोमड़ी ने उसे उठाया और चल पड़ी ।

भूखा कौआ निश्चय ही उस दिन वह गीत न गा सका होगा और अगर गाता भी तो खुद को छोड़कर वह किसे भुलावा देता ? आप कह सकते हैं कि जिसे पकी पकाई रोटी मिल जाती हो वह भला खेती क्यों करेगा ? पर रोटियों के गीत से रोटी

नहीं मिलती और पराई रोटियों के भरोसे जीने वालों को रोटियां भी रोज नहीं मिलती । संतुष्टि की चपातियां खाने से पहले जरूरी है कि हम असंतुष्टि के साथ पापड़ बेलना भी सीखें अपने अभावों के साथ हाथ पर हाथ रख कर बैठने से बेहतर है कि हम अपने इस स्वभाव से लड़ना सीखें जाने कौन सा आलस्य या लक्ष्य हमारी उपलब्धि बनने को तैयार बैठा हो । मैं यह नहीं कहना चाहता कि संतुष्ट हो कर दो चार पल बैठने के बजाए असंतुष्ट हो कर हर दम भागते रहना ही बेहतर है । ऐसा न हो कि हमारा संतोष हमारी सम्भावनाओं के द्वार का पत्थर बन जाए ।

दरअसल जो मानसिकता संतोष को सबसे बड़ा धन मानती है वही मानसिकता असंभव शब्द को भी संसार की अधिकांश उपलब्धियों का ब्रहमवाक्य भी बना देती है । जिस क्षण एक व्यक्ति किसी चीज को असंभव कह रहा होता है उसी क्षण एक लाख व्यक्ति उसे संभव बनाने की कोशिश में जुटे होते हैं और उनमें से सौ व्यक्ति उसे संभव कर सकने की स्थिति में भी पहुंच चुके होते हैं । बेचैनी असंतोष की निशानी है और असंतोष प्रगति की पहली आवश्यकता है । इस संसार में पूरी तरह संतुष्ट कोई भी इन्सान नहीं है यह नितांत सत्य है ।

अन्त में मैं कहना चाहूंगा कि हो सकता है मेरा विचार गलत भी हो । मेहनत के साथ जीवन में शान्ति आती है । किन्तु शान्ति की तलाश तो ठीक है परन्तु हो सके तो शान्ति शिखर तक होनी चाहिए एक छोटी सी कहानी से अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं।

एक पेड़ पर एक हंस आराम से बैठा था ।
उसी पेड़ के नीचे एक खरगोश भी आराम से बैठा था ।
एक भेड़िया आया और खरगोश को मार कर खा गया ।

(अगर आपको आराम से ही बैठना है तो शिखर पर बैठें धरातल पर नहीं)

सवेरा अ0 डेविड,	**आसमान पे है खुदा** अ0 डेविड,

प्रवर श्रेणी लिपिक
मुद्रण क्षेत्र, हैदराबाद

रात भर का है
मेहमान अंधेरा
किस के रोके रूका है सवेरा

रात जितनी भी संगीन होगी
सुबह उतनी ही रंगीन होगी
गम न कर, गर है बादल घनेरा
किस के रोके रूका है सवेरा

लब पे शिकवा न ला अश्क पी ले
जिस तरह भी हो कुछ देर जी ले
अब उखडने को है गम का डेरा
किस के रोके रूका है सवेरा

यूं ही दुनिया में आकर न जाना
सिर्फ आंसू बहाकर न जाना
मुस्कराहट पे भी हक है तेरा
किस के रोके रूका है सवेरा

आसमान पे है खुदा और जमीं पे हम
आजकल वह इस तरफ देखता है कम

आजकल किसी को वह टोकता नहीं
चाहे कुछ भी कीजिए रोकता नहीं
हो रही है लूट मार फट रहे हैं बम
आसमान पे है खुदा और जमीं पे हम

किस को भेजे वह यहां खाक छानने
इस तमाम भीड़ का हाल जानने
आदमी हैं अनगिनत देवता हैं कम
आसमान पे है खुदा और जमीं पे हम

इतनी दूर से अगर देखता भी हो
तेरे मेरे वास्ते क्या करेगा वो
जिन्दगी है अपने-अपने बाजुओं का दम
आसमान पे है खुदा और जमीं पे हम

ꕥ ꕥ ꕥ

देश को एक सूत्र में बांधने के लिए, भारत के भिन्न-भिन्न हिस्से संबंधित रहें, इसके लिए हिन्दी की जरूरत है ।

-पं0 जवाहरलाल नेहरू

आंशिक दृष्टि ही अज्ञान है ।

सोमबाला, खलासी
स्थापना-1, महासर्वेक्षक का कार्यालय ।

विपरीत को स्वीकार करना बड़ा कठिन है और जो विपरीत को स्वीकार कर ले वही ज्ञानी ।

जीवन ठीक उसी तरह उल्टा है जिस तरह बिजली के ऋणात्मक और धनात्मक छोर होते हैं ।

इन दोनों छोर के होने से ही विद्युत की गति होती है और ऐसे ही विपरीत छोर होने से जीवन गति करता है ।

जीवन सब दिशाओं में विपरित से बंधा हुआ है लेकिन जब हम एक पहलू को देखते हैं तो दूसरे को बिलकुल भूल जाते हैं और यही भूल हमारे जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। जब हम कांटे देखते हैं तो हम फूल नहीं देखते और जब हम फूल देखते हैं तो कांटे नहीं देखते । जबकि फूल और कांटे एक ही वृक्ष पर लगे हैं । एक ही शाखा दोनों को प्राण दे रही है और एक ही जड़ दोनों को जीवन दान कर रही है। एक ही सूरज दोनों पर किरणें बरसा रहा है, एक ही माली ने दोनों को जल दिया है और एक ही अस्तित्व से दोनों का आगमन हुआ है - वे दोनों एक हैं गहरे में । लेकिन जब हमें फूल दिखाई पड़ते हैं तो फूल हमारी आंखों पर इस तरह छा जाते हैं कि कांटों को हम भूल जाते हैं। जितने ज्यादा हम कांटों को भूलते हैं उतनी ही जल्दी कांटे चुभ जाते हैं और फिर हमें चुभन ही याद रह जाती है पर हमें यह ज्ञान नहीं होता कि फूलों के लगाव के कारण ही यह चुभन हमने कमाई है । दरअसल हमारी दृष्टि सदा आंशिक रहती है और आंशिक दृष्टि ही अज्ञान है । हालांकि आंशिक दृष्टि गलत नहीं होती, वह भी सत्य को देखती है लेकिन अधूरे सत्य को देखती है और शेष जो दूसरा हिस्सा है, वह इतना विपरीत मालूम पड़ता है कि हम दोनों में कोई संगति भी नहीं जोड़ पाते । यदि कोई सम्मान में उसके दूसरे हिस्से यानी अपमान को देख लेता है तो सम्मान और अपमान एक ही सिक्के के दो पहलू हो जाते हैं और वह दोनों के पार उठ जाता है । इसलिए जो विपरीत को स्वीकार कर लेता है उसे ज्ञानी कहते हैं ।

ꕥ ꕥ ꕥ

तम्बाकू : तथ्यात्मक परिचय

गौरव कुमार आनन्द,

सर्वेक्षक, अंतर्राष्ट्रीय सीमा निदेशालय, नई दिल्ली ।

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस : 31 मई ।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार भारत में लगभग 27 करोड़ व्यक्ति तम्बाकू या इससे बने उत्पादों के किसी न किसी रूप में प्रयोग करने की बुरी लत के शिकार हैं अर्थात् हर तीसरा भारतीय इस महामारी से ग्रस्त है । वर्ष 2011 में तम्बाकू से होने वाली बीमारियों का इलाज करने में भारत सरकार ने लगभग 104500 करोड़ रूपये से अधिक व्यय किए गए । भारत में 13 से 15 वर्ष के लगभग 4 प्रतिशत किशोर सिगरेट / बीड़ी की लत से ग्रस्त हैं तथा 12 प्रतिशत बच्चे तम्बाकू से बने अन्य उत्पादों की लत के शिकार हैं । उपरोक्त आंकड़ों के अतिरिक्त इन आंकड़ों के दुगने व्यक्ति न चाहते हुए भी अप्रत्यक्ष धूम्रपान करते हैं । जिसमें धूम्रपान करने वाले मॉ बाप के बच्चों की संख्या सर्वाधिक है ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार सम्पूर्ण विश्व में लगभग एक अरब व्यक्ति तम्बाकू या इससे बने उत्पादों की बुरी लत के शिकार हैं । विश्व में लगभग 10 लाख व्यक्ति प्रति वर्ष इस लत के कारण मारे जाते हैं । विगत बीस वर्षों में पूरे विश्व में आतंकवाद से मरने वालों की संख्या लगभग 2,50,000 है जबकि तम्बाकू से मरने वालों की संख्या लगभग दो करोड़ है । यह तुलना आप स्वयं कर सकते हैं कि आतंकवाद के विरोध में पूरा विश्व एक मत है जबकि उससे भी भयानक इस तम्बाकू जैसे दैत्य पर अंकुश लगाने के लिए मात्र एक विश्व तम्बाकू निषेध दिवस घोषित कर विश्व नेतृत्व ने अपनी इतिश्री समझ ली और फिर सभी लोग गए इस तम्बाकू के जरिये पैसा कमाने में । जानकर आश्चर्य होगा कि भारत में एक सबसे बड़ी कम्पनी का नाम ही आई०टी०सी० है जिसका अर्थ है इण्डियन टोबेको कम्पनी । आतंकवाद और तम्बाकू में केवल एक ही अंतर है तम्बाकू को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष विज्ञापन एवं प्रचार प्रसार, सुन्दर व आकर्षक पैकिंग, के जरिये पूरे विश्व में फैलाया जाता है जबकि आतंकवाद के साथ ऐसा नहीं है । यहॉ तक कि विश्व की सभी फिल्मों में, टेलिविजन कार्यक्रमों इत्यादि में जब भी आतंकवाद से जुड़ी घटनाओं के अंत में आतंकवादी की मृत्यु या पूरे संगठन का अंत दिखाया जाता है जबकि दूसरी ओर फिल्म का नायक, खलनायक व कई अन्य कलाकार पान, तम्बाकू, गुटखा, हुक्का, चिलम इत्यादि का प्रयोग खुलेआम करते दिखते हैं और अंत तक जीवित भी रहते हैं, केवल एक छोटा सा वाक्य तम्बाकू प्रयोग के दृश्य के साथ दिखाया जाता है कि इस

फिल्म अथवा दृश्य के कलाकार किसी भी प्रकार से तम्बाकू को बढ़ावा नहीं देते । एक सिगरेट/बीड़ी पीने से एक व्यक्ति की आयु 7 से 11 मिनट कम हो जाती है ।

तम्बाकू में 4000 से अधिक हानिकारक रसायन व तत्व पाए जाते हैं जिनमें से 69 सीधे सीधे कैंसर पैदा करने के लिए उत्तरदायी हैं । तम्बाकू का धूआं मानव शरीर में टार (कोलतार या तारकोल) के रूप में जमा हो जाता है और फेफड़ों पर उसी प्रकार जम जाता है जैसे सड़क पर मोटर वाहन चलाने के लिए जमाया जाता है । एक शोध के अनुसार विश्व में धूम्रपान करने वाले कुल व्यक्तियों के शरीर से यदि यह टार निकाला जाए तो एक किलोमीटर तक की सड़क का निर्माण किया जा सकता है । इसी कारण भारत में (भले ही काफी देरी से) कुछ प्रयास किए जा रहे हैं जिससे इस महामारी से मुक्ति पाई जा सके और आने वाली पीढ़ी को एक स्वस्थ पर्यावरण दिया जा सके ।

गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्य प्रदेश सहित 26 प्रदेशों ने गुटखा पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है (भले ही कागजों में ही सही) । हिमाचल प्रदेश ने तम्बाकू उत्पादों पर टैक्स बढ़ा कर पहला धूम्रपान मुक्त राज्य होने का दर्जा पा लिया है । दिल्ली में सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करना दण्डनीय अपराध घोषित किया गया है और ऐसा करते पाए जाने वालों पर 200 रूपये के जुर्माने का प्रावधान किया गया है। मैंने स्वयं देखा है कि राजधानी के सबसे व्यस्त क्षेत्र कनॉट प्लेस में अनेक व्यक्तियों को सिगरेट पीने पर 200 रूपये का जुर्माना भरते हुए ।

केन्द्र सरकार द्वारा सभी सरकारी कार्यालयों में पूर्ण धूम्रपान निषेध किया गया है और मेरी नजर में यह पूरी तरह से सफल रहा है । मेरे विचार में निम्नलिखित नारों को सभी सार्वजनिक स्थानों पर विज्ञापित किया जाना चाहिए।

'तम्बाकू की लत, मौत का खत'
'तन मन करता कौन खराब, गुटखा बीड़ी पान शराब'
'तन मन के हैं ये डाकू, गुटखा, बीड़ी, पान, तम्बाकू'
'स्मैक का पैगाम, ढाई अक्षर का मेरा नाम, ढाई साल में काम तमाम'

ꕥ ꕥ ꕥ

भारत में लिवइन और विवाह: एक तुलनात्मक विश्लेषण

आबिद अली,उ0श्रे0लि0,

स्थिति - 1 भारत में एक वयस्क महिला व एक वयस्क पुरूष एक छत के नीचे लिवइन संबंध में रह सकते हैं । लिवइन संबंध के टूटने पर महिला गुज़ारे भत्ते के लिए साथ में रहने वाले पुरूष पर भारतीय आचार सहिंता की धारा 125 के अंतर्गत दावा कर सकती है । घरेलू हिंसा की धारा 12 के अंतर्गत पुरूष से समान घर में रहने का, लिवइन संबंध से पैदा होने वाले बच्चे के भरण पोषण एवं अपने खर्चे का दावा कर सकती है ।

उपरोक्त स्थिति भारत में कानूनी रूप से उच्चतम न्यायालय द्वारा मान्य है । प्रश्न यह है कि यह स्थिति अथवा यह सुविधा अथवा प्रावधान, जो भी कहें, भारतीय समाज में कहां से आया? उत्तर है कि 'पश्चिमी उदारवादी समाज' की देन है । इस प्रकार की 'सुविधा पूर्ण' कानून तथाकथित पिछड़े भारतीय समाज से अधिक आधुनिक, उदार, महिलाओं व बच्चों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील, प्रगतिशील पश्चिमी समाज से या तो स्वत: ही अपना लिए गए अथवा किसी भी न्यायिक संस्था द्वारा भारतीय समाज के लिए मान्य कर दिए गए कानूनों में से एक है ।

स्थिति - 2 दूसरी ओर एक स्थिति और है जहां एक दम्पति को तलाक या दूसरे शब्दों में कहें सम्बंध विच्छेद अथवा विवाह विच्छेद के लिए कोर्ट के अतिरिक्त कोई विकल्प ही उपलब्ध नहीं है। मुस्लिम समाज के अतिरिक्त भारत में रहने वाले सभी धर्मों के मानने वालों के लिए तलाक के लिए कोर्ट अथवा पारिवारिक न्यायालय की शरण में ही जाना पड़ता है । एक लम्बी और कभी कभी अंतहीन अदालती प्रक्रिया से गुजराना पड़ता है। जिससे न्यायालय का पहला दृष्टिकोण रहता है कि स्थिति का अवलोकन करना और ऐसी परिस्थितियों का अन्वेषण करना जिसमें दोनों पति पत्नी साथ रह सकें अर्थात् परिस्थितियां कुछ भी हो न्यायालय अत्यधिक संवेदनशीलता के साथ यही प्रयास करता है कि पति-पत्नी साथ ही रहें और इसके लिए भारत में तलाक के लिए केवल कुछ सीमित आधार ही उपलब्ध हैं। इस प्रकार यदि इन सीमित आधारों में से भी कोई सही सही फिट हो जाता है तो भी कम से कम छ: माह का समय तलाक के लिए आवश्यक है क्योंकि भारत में विवाह को धार्मिक मान्यता एवं आधार प्राप्त है। सिख एवं सनातन धर्म में विवाह एक धार्मिक अनुष्ठान है जो पूर्ण विधि विधान के साथ ही सम्पन्न हो सकता है और दोनों धर्मो में विवाह सात जन्मों का सम्बंध माना गया है तलाक या विवाह विच्छेद जैसा कोई प्रावधान नहीं है। कुछ

पौराणिक ग्रन्थों में पत्नी को त्यागने का विवरण भी उपलब्ध है। पत्नी द्वारा पति को त्यागने का एक मात्र उदाहरण भी कहीं उपलब्ध नहीं है। ईसाई धर्म में भी विवाह केवल चर्च में ईश्वर के सम्मुख ही सम्पन्न हो सकता है । जो एक अनन्तकाल तक चलनेवाला सम्बंध माना गया है ।ईसाई धर्म में तो कहीं भी तलाक या विवाह विच्छेद जैसा कोई शब्द या प्रावधान उपलब्ध ही नहीं है ।फिर भी यूरो व पश्चिमी देशों में या आंकड़ों के अनुसार ईसाई बाहुल्य देशों में तलाक या न्यायिक अलगाव (ज्यूडिशियल सैपरेशन) की दर सबसे अधिक है।

स्थिति- 3 अर्थात् जानवरों की तरह लड़ने वाले पति-पत्नी के लिए न चाहते हुए भी कम से कम छः माह तक एक दूसरे को बर्दास्त करना आवश्यक है । यह तो केवल नियम मात्र है व्यावहारिक रूप से तलाक लेने की प्रक्रिया इतनी जटिल है कि सामान्य रूप से विरले प्रकरणों में ही छः माह में तलाक संभव हो पाता है अन्यथा अदालती कार्रवाई में केस चलते रहते हैं । और इस दौरान पति-पत्नी दोनों दूसरा विवाह न करने के लिए बाध्य हैं। और इसी बीच यदि पति किसी महिला के साथ या पत्नी किसी अन्य पुरूष के साथ रहना चाहे तो भारतीय समाज, भारतीय परम्पराएं भारत के सभी धार्मिक मत इस प्रकार के सम्बंधों को एक मत से अवैध सम्बंधों की संज्ञा देते हैं । जबकि उदारवादी, प्रगतिशील सोच वाला पश्चिमी समाज इसे लिवइन की संज्ञा देता है ।

अर्थात् स्थिति -1 की उत्पत्ति का एक कारण स्थिति-2 भी है और भारत के माननीय न्यायालयों द्वारा इस तथ्य को समझा गया, समय एवं परिस्थितियों की मांग को देखते हुए स्थिति-1 को भारतीय समाज के लिए मान्य किया गया। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या इस तथाकथित उदारवादी, प्रगतिशील सोच वाले पश्चिमी समाज से अपनी सुविधा के लिए केवल वही प्रावधान उठाने चाहिए जो भारत की न्याय व्यवस्था स्वविवेक से ठीक समझे यदि एक वयस्क महिला व एक व्यस्क पुरूष एक साथ केवल अपनी मर्जी से (या यूं कहें कि समाज की मर्जी के विरूद्ध) लिवइन में रह सकते हैं तो उन्हें यह अधिकार क्यों नहीं है कि वे अपनी मर्जी से किसी भी संबंध से बाहर भी निकल सकें। क्यों उनके निर्णय पर न्यायालय अपनी दिखावटी संवेदनशीलता थोपता है और न चाहते हुए भी साथ रहने को मजबूर करता है।

जब तक इसी प्रकार के अनेक प्रश्नों का समाधान नहीं होता, भारतीय समाज एक ऐसी नाव की स्थिति में चलता रहेगा जो एक ओर से हल्की है और दूसरी ओर से

समाज परम्पराओं, आडम्बर, दिखावटी संवेदनशीलता के बोझ से दबी हुई। इन अधकचरे नियमों का परिणाम आज समाज में बढ़ते बलात्कार, यौन, हिंसा, पारिवारिक हिंसाएं, आत्म-हत्या या युवा वर्ग का विवाह जैसी संस्था से दूर होते जाना के रूप में सामने आ रहा है। समय के साथ-साथ यह स्थिति और बदतर होती जाएगी यदि जल्द ही कुछ न किया गया तो।

ꕥ ꕥ ꕥ

बेटी

संकलन जय सिंह,
सर्वेक्षण सहायक,
तकनीकी अनुभाग (म.स.का.)

बेटा वारिस है तो, बेटी पारस है ।
बेटा वंश है तो, बेटी अंश है ।
बेटा आन है तो, बेटी शान है ।
बेटा तन है तो, बेटी मन है ।
बेटा मान है तो, बेटी गुमान है ।
बेटा संस्कार है तो, बेटी संस्कृति है ।
बेटा दवा है तो, बेटी दुआ है ।
बेटा भाग्य है तो, बेटी विधाता है ।
बेटा शब्द है तो, बेटी अर्थ है ।
बेटा गीत है तो, बेटी संगीत है ।

ꕥ ꕥ ꕥ

'हूक'

प्रदीप कुमार वर्मा 'मौजपुरी'
मानचित्रकार ग्रेड -।।
अंतर्राष्ट्रीय सीमा निदेशालय, नई दिल्ली ।

वक्त की कतरनें,
जब भी उड़ कर आती हैं ।
बन के यादों की बदली,
मन पे छा जाती हैं ।।

भीग जाता है हर एहसास,
उनकी हल्की – तेज़ फुहारों में ।
जिनसे गुज़र कर जज़्बातों की,
एक नई दुनिया ही बस जाती है । ।
वक्त की कतरनें.....
उभर आते हैं क्षितिज में,
हल्के गहरे साए सभी
जिनसे सुख-दुख, उमंगों अवसादों की,
हर खुशबू ताज़ा हो जाती है ।।
वक्त की कतरनें.....
घूमती नज़रें अक्सर,
ढूंढती हैं अनंत में, शून्य की ओर ।
जहां रोशनी की हल्की सी किरण,
उम्मीदों का कोई फूल खिलाती है ।।

वक्त की कतरनें,
जब भी उड़ कर आती हैं ।
बन के यादों की बदली,
मन पे छा जाती हैं ।।

ꕥ ꕥ ꕥ

एक्सीडेंट

- अनिल मेहता,
महासर्वेक्षक का कार्यालय

मनुष्य के जीवन में बचपन से अन्त तक न जाने कितनी घटनायें घटित होती हैं। हम सभी के जीवन में भी बहुत सी ऐसी सामान्य-असामान्य घटनायें घटित होती हैं, जिनमें से अधिकतर तो हम कुछ ही दिनों के बाद भूल जाते हैं, परन्तु कुछ विशेष और अविस्मरणीय होती हैं। कभी न भूलने वाली यह घटनायें हमारे जीवन को कई प्रकार से प्रभावित करती हैं व जीवनभर के सुख अथवा दुख का कारण बनती हैं। कभी-2 कुछ घटनायें ऐसी भी घटती हैं जो समय विशेष के लिए तो कष्टकारी होती हैं, परन्तु बाद में कभी उन परिस्थितियों की याद आने पर स्वतः ही आपके मुख पर मुस्कुराहट आ जाती है। मेरे साथ घटित ऐसी ही एक दुर्घटना का वर्णन आपके समक्ष प्रस्तुत है।

वर्षों पुरानी बात है। उस समय देहरादून की सड़कों पर ट्रैफिक बहुत कम होता था। अधिकतर लोग पैदल अथवा साइकिल द्वारा ही अपना सफर तय करते थे, सिटी बस भी बहुत कम ही चलती थीं और विक्रम तो थे ही नहीं। स्कूटर और कार बहुत ही कम लोगों के पास ही होते थे। उन दिनों में केवल तीन प्रकार के स्कूटर प्रचलन में थे - बजाज वैस्पा, बजाज चेतक तथा लम्ब्रेटा। लम्ब्रेटा स्कूटर का कुछ उन्नत मॉडल था 'लैम्बे'। यद्यपि अब तो वे स्कूटर कहीं नहीं दिखते परन्तु शायद आपको भी याद हो लम्ब्रेटा स्कूटर, वैस्पा व चेतक के मुकाबले काफी भारी तथा साइज़ में भी बड़ा था।

सौभाग्य से हमारे पास भी 'लैम्बे' स्कूटर था। अपने हम उम्र बच्चों के समान मैं भी स्वयं को एक एक्सपर्ट चालक समझता व अवसर मिलते ही निडरता से स्कूटर पर

अपनी ड्राइविंग स्किल का प्रदर्शन कर लेता था। मैं व मेरे मित्र प्रदीप कुमार व राजीव जुगरान एक-दूसरे के पिलियन राइडर बन ड्राइविंग का खूब आनन्द लेते थे ।

जून 1983 की बात है, मेरे बड़े भाई साहब किसी आवश्यक कार्य से दिल्ली गये हुए थे। स्कूल की छुट्टियां थी और हमारे पास स्वर्णिम अवसर था स्कूटर की सवारी का। चार-पाँच दिन ऐसे ही ड्राइविंग का आनन्द लेते बीत चुके थे और अगले दिन मेरे भाई साहब ने दिल्ली से वापिस आना था। उस दिन शाम को भी हम मित्रों का कुछ देर 'लैम्बे' पर दून की सड़कें नापने का प्रोग्राम था अतः सांय 5 बजे राजीव और मैं प्रदीप के घर पहुंच गए। प्रदीप ने हमें बताया कि उसके बड़े भाई साहब को अपने कार्यालय के आवश्यक कार्य से 6.30 की गाड़ी से लखनऊ जाना है, और वह उन्हें छोड़ने रेलवे स्टेशन जा रहा है, अतः हम भी उसके साथ स्कूटर से रेलवे स्टेशन की ओर ही चलें। भाई साहब ने अपने मित्र के लिए लीची की एक पेटी ले जानी थी, सो प्रदीप ने वह पेटी हमें देते हुए कहा कि हम दोनों वह ले कर स्कूटर पर स्टेशन पहुंच जायें और वह भाई साहब के साथ मोटर साइकिल से स्टेशन आ रहा है। ट्रेन छूटने में अभी काफी समय था और हमारी इच्छा अधिक से अधिक दूरी तक ड्राइविंग का आनन्द लेने की थी, अतः प्रदीप के घर से पल्टन बाज़ार-धामावाला से स्टेशन जाने की बजाय घंटाघर, तहसील चौक, प्रिंस होटल, गांधी रोड़ से स्टेशन की ओर चल दिए। सड़क पर ट्रैफिक नाममात्र को ही था। उन दिनों सड़क पर कहीं भी डिवाइडर नहीं होते थे। अधिकतर सड़क खाली थी, अपनी धुन में आगे बढ़ते हम गांधी रोड़ पर लक्ष्मी टॉकीज़ के सामने से गुजर रहे थे। सड़क के दूसरी ओर कुछ मज़दूर सड़क पार करने के लिए इंतजार में खड़े थे कि अचानक उनमें से एक मज़दूर भागता हुआ सीधे हमारे स्कूटर के सामने आ गया। मैंने उसे

बचाने के लिए जोर से ब्रेक लगाए, परन्तु होनी को कुछ और ही मंजूर था। मेरी सारी ड्राइविंग-स्किल धराशायी हो गयी और लाख कोशिशों के बावजूद भी मज़दूर स्कूटर से टकरा ही गया और हम दोनों हल्के-फुल्के मित्र हवा में उछले और अपनी शान की सवारी भारी-भरकम 'लैम्बे' से छिटक कर दूर जा गिरे। टक्कर तो न जाने कितनी जोरदार थी परन्तु मुझे बस इतना याद है कि आसपास की दुकानों से लोग बाहर भाग कर आये और मुझे उठाकर एक कुर्सी पर बिठाया। मैं अर्धचेतन की सी अवस्था में था, चारों ओर अंधेरा सा नज़र आ रहा था, लोगों की अस्फुटित आवाजें मेरे कानों में आ रही थी, 'मार दिया लड़के को, अबे ऐसी क्या जल्दी थी तुझे सड़क पार करने की', कोई कह रहा था 'अरे इसे छोड़ो पहले इस लड़के को पानी पिलाओ', 'अरे, पानी नहीं हल्दी वाला दूध लाओ'। जैसे-तैसे किसी ने मुझे पानी पिलाया और मेरी चेतना लौट आयी। मेरे माथे से खून बह रहा था, घुटनों में भी पीड़ा हो रही थी। पैंट ऊपर की तो पाया कि मेरे दोनों घुटनों से भी खून बह रहा था। राजीव को भी कुछ चोट लगी थी, परन्तु उसकी हालत मुझ से अच्छी थी। मज़दूर को केवल पांव में हल्की चोट लगी थी। आसपास के दुकानदारों ने हमें सांत्वना देते हुए कि चलो बच गए सभी, जाने को कहा। राजीव ने ड्राइविंग सीट संभाली व मैं रूमाल से माथे का खून पौंछता पीछे बैठ गया और हम स्टेशन की ओर चल दिए।

हमने अभी कुछ ही दूरी तय की थी कि हमें लगा जैसे कोई पीछे से हमारा स्कूटर खींच रहा है। मैंने पीछे देखा तो दंग रह गया, उस मज़दूर के बहुत से साथी हमारे स्कूटर का कैरियर पकड़े हुए, हमारे पीछे-2 दौड़ रहे थे। उनसे बचने की कोशिश करते हम किसी तरह स्टेशन के मोड़ तक ही पहुंचे थे कि सामने से दो लम्बे-चौड़े व्यक्तियों ने हमें रोकते हुए नीचे उतरने को कहा। राजीव ने स्कूटर रोका ही था कि उनमें से एक राजीव का हाथ पकड़ते हुए बोला, ''अच्छा बेटा, टक्कर मार कर भाग रहे हो''? राजीव के कुछ बोलने से पूर्व ही मैंने कहा, ''अंकल जी, टक्कर लगने के समय यह नहीं, ड्राइविंग मैं कर रहा था।'' ''अबे, तो चल तू ही बता दे! क्यों मारी टक्कर? इतना बड़ा आदमी दिखा न तैंने?'', दूसरा व्यक्ति बोला। मैंने कहा, ''अंकल जी, आप किसी से भी पूछ लो, टक्कर हमने इसे नहीं मारी, यह ही भागता हुआ हमारे सामने आ गया था,

हमारी कोई गलती नहीं है। आप स्वयं देख लो ज्यादा चोट भी मुझे ही लगी है।'' ''हाँ, बेटा! सब ऐसे ही कहते हैं, अपनी गलती कौन मानता है। जब चौकी में ले चलेंगे तुम दोनों को तो सब पता चल जाएगा, कि किसकी कितनी गलती है।'' तब हमें इस बात का अहसास हुआ कि वे व्यक्ति साधारण अंकल नहीं सिविल वर्दी में पुलिसमैन हैं। टक्कर के बाद जब लोगों ने हमें सड़क से उठाया था, तभी उस मज़दूर का एक साथी सीधा लक्खीबाग पुलिस चौकी जा पहुंचा था, जिसके फलस्वरूप वे दोनों पुलिसमैन वहां आए थे। अभी वे हम से पूछताछ ही कर रहे थे कि हमें ढूंढ़ता हुआ प्रदीप भी वहां पहुंच गया। राजीव से सारी बात जानने के बाद वह भी उस मुसीबत से बाहर निकलने का रास्ता सोचने लगा। हमारे बार-2 निर्दोष होने के अनुरोध पर कोई ध्यान न देते हुए उनमें से, एक ने कहा, ''चौकी तो इन्हें बाद में ले चलेंगे, पहले इस मज़दूर का इलाज करवाना होगा, इसलिए पहले दून अस्पताल चलो''।

ट्रेन छूटने से पूर्व लीची की पेटी भाई साहब तक पहुंचाना आवश्यक था, अतः प्रदीप ने स्कूटर से पेटी उठाई व मोटर साईकिल घर छोड़कर जल्द ही अस्पताल पहुंचने का वायदा कर स्टेशन की और दौड़ पड़ा। एक अंकल ने पास से गुजरते ऑटो-रिक्शा को रोका और स्वयं अंदर बैठते हुए मुझे और उस मज़दूर को भी उसमें बैठने का आदेश सुनाते हुए ऑटोवाले को दून अस्पताल चलने को कहा। दूसरे अंकल ने स्कूटर स्टार्ट कर राजीव को पीछे बिठाया और ऑटो के साथ-2 चल दिये। कुछ ही क्षणों में हम दून अस्पताल पहुंच गये। एक पुलिसमैन राजीव का हाथ पकड़कर स्कूटर के निकट खड़ा हो गया और दूसरे ने मेरा हाथ पकड़ा और मज़दूर को साथ ले आपातकालीन कक्ष की ओर चल दिया। आपातकालीन कक्ष में मौजूद डॉक्टर ने मज़दूर को चैक करने के पश्चात 'सब ठीक है' कहते हुए उसे 8-10 गोलियां दे दी। यद्यपि मेरे माथे पर भी चोट साफ दिखाई दे रही थी, परन्तु मेरी ओर न तो डाक्टर ने कुछ ध्यान दिया और न ही पुलिसमैन ने। हम तीनों बाहर आ गये। मैं सोच रहा था, चलो जान बची। जब सब कुछ ठीक है तो यह हमें छोड़ देंगे। परन्तु कितना गलत सोच रहा था मैं, कालचक्र का असली चक्कर तो अभी चलना बाकी था।

जैसे सब कुछ पूर्व निर्धारित था, एक पुलिसमैन ने मुझे किनारे पर ले जाते हुए कहा, ''यार तुझे देखकर मुझे अपने छोटे भाई की याद आ रही है। वैसे क्या करते हो तुम दोनों?'' मैंने बताया कि हम डी0ए0वी0 इंटर कॉलेज के छात्र हैं।'' वह बोला देख तू मुझे मेरे छोटे भाई जैसा लग रहा है, इसलिए तेरे साथ सख्ती नहीं करना चाह रहा हूँ, वरना अब तक तो 8-10 डन्डों का स्वाद तो मैंने तुम्हें चखा ही दिया होता। चल एक काम करते हैं, तुम दोनों का समझौता करा देते हैं, सारे चक्करों से बच जाओगे।'' मैं तो स्वयं यही चाहता था। मेरे हामी भरते ही वह बोला, ''ठीक है! मैं इस मज़दूर से बात करता हूँ'' और वह मज़दूर को लेकर एक किनारे पर गया ही था कि मज़दूर के अन्य साथी भी वहां पहुंच गये। पुलिसमैन ने मेरी ही तरह मज़दूर को भी न जाने किन बातों में उलझा कर फँसा लिया और फिर मेरे पास आकर बोला, ''बड़ी मुश्किल से माना है यह, ऐसा करो तुम इस मज़दूर को 150 रूपये दे दो, आगे के इलाज़ वगैरह के लिए। हम इससे लिखवा लेते हैं कि यह अपनी शिकायत वापिस ले रहा है और तुम पर कोई पुलिस कार्यवाही नहीं चाहता है।'' 150 रूपये देने होंगे, सुनते ही मेरे होश गुम हो गये। उस समय में 150 रूपये, इतने रूपये तो हम तीनों मित्रों के पास मिलाकर भी नहीं थे। मैंने कहा, ''अंकल, मेरे पास तो इतने रूपये हैं नहीं।'' वह बोला, ''कोई बात नहीं अपने दोस्तों से ले ले।'' मैं तो पहले ही जानता था कि इतने रूपये उनके पास भी नहीं होंगे, फिर भी मैंने अपने मित्रों को सब कुछ बता दिया। वे भी समय की नज़ाकत को समझ रहे थे, परन्तु तीनों की पाकिट के सारे पैसे मिला कर भी हमारे पास केवल 75 रूपये ही एकत्र हुए। काफी देर तक सोचने के बाद प्रदीप बोला, ''तू चिन्ता मत कर, 75 रूपये मैं झाई जी (पंजाबी में माँ को झाई जी भी कहते हैं) से मांग लूंगा'' और प्रदीप व राजीव रूपये लाने चल दिये। मुझ से भाई का रिश्ता जोड़ने वाले अंकल बोले, ''जब तक तेरे दोस्त पैसा ले कर आते हैं, हम तुम्हारा सुलहनामा लिखवा लेते हैं।'' उन्होंने जेब से एक सादा कागज़ निकाला और मुझे देते हुए कहा, ''लिख इस पर - मैं आज शाम 5.30 बजे गांधी रोड़ पर सड़क पार कर रहा था तो दो लड़कों ने स्कूटर से मुझे टक्कर मार दी थी, जिसकी रिपोर्ट मेरे साथियों ने लक्खीबाग पुलिस चौकी में की थी। इन लड़कों ने डाक्टर से मेरा इलाज़ करवा दिया है और आगे के लिए भी मुझे इलाज़-खर्च

दे दिया है, इसलिए मैं अपनी रिपोर्ट वापिस लेना चाहता हूँ। आप इन दोनों पर कोई कार्यवाही न करें।'' मैंने कागज पर यह सब कुछ लिख दिया। उन्होंने मज़दूर से उस कागज पर हस्ताक्षर करने को कहा पर वह बेचारा लिखना-पढ़ना कहां जानता था। अतः उन्होंने मज़दूर के अंगूठे पर पैन की स्याही लगाते हुए सुलहनामे पर उसका निशान लगवा लिया और गवाह के रूप में उसके एक साथी का अंगूठा लगवा कर वह कागज़ अपनी जेब में रख लिया। इतने सारे मज़दूर, उनके साथ वे दोनों अंकल और उनके चक्रव्यूह में फँसा मैं अकेला। इंतजार की घड़ियां तो वैसे भी लम्बी ही होती हैं। घर से पैसे लाना कोई इतना आसान भी नहीं था, आखिर झाई जी ने भी तो पूछना ही था न, कि आखिर इतने रूपये क्यों चाहिए। मैं डरा-सहमा सा खड़ा अपने मित्रों का इंतजार कर रहा था और मेरे प्रिय अंकल मेरे डर को और बढ़ाने की सोच रहे थे। मेरे पास आकर बोले, ''देख लिया बेटा! कोई किसी का नहीं होता! तू तो एकदम मान गया था कि एक्सीडेंट तुझ से हुआ है, पर देख ले तेरे दोस्त तुझे अकेला छोड़ कर भाग गए। दोस्त-वोस्त सब बेकार की बातें हैं। मुसीबत में कोई साथ नहीं देता।'' तभी दूसरे ने भी सुर में सुर मिलाया, ''दीवानजी, लगता है इसे चौकी ही ले कर चलना पड़ेगा, हम तो सोच रहे हैं, बच्चा है, एक बार चौकी में नाम लिखा गया तो बेकार इसका भविष्य खराब हो जायेगा, पर क्या करें? इसके दोस्त ही इसे धोखा दे गये।''

सांझ के बढ़ते अंधेरे के साथ मेरा डर भी बढ़ता जा रहा था, परन्तु अपने मित्रों पर भी मुझे पूर्ण विश्वास था। मैं बोला, ''वे जरूर आयेंगे, आप थोड़ी देर और रूक जाओ।'' और मेरा विश्वास जीत गया, कुछ ही देर बाद विजयी मुस्कान लिये प्रदीप व

राजीव हमारे सामने थे। प्रदीप ने जेब से रूपये निकाले ही थे कि जैसे बाज़ झपटता है अपने शिकार पर, उन अंकल ने उनके हाथ से रूपये छीने और उस मज़दूर के गले में हाथ डालकर एक कोने की ओर चल दिये। कुछ ही देर में सभी मज़दूर वहां से चले गये और रह गये हम तीनों मित्र और हमारे प्यारे दोनों अंकल। ''ले बेटा, तुझे भाई माना है, इसीलिए तुझे बचा दिया। चल अब हमारा हिसाब कर।'' ''आपका हिसाब?'' मैं बोला। ''हाँ भई!'', दूसरा बोला। हम तीनों मित्रों की समझ में नहीं आया कि उनका कैसा हिसाब करना है। हमें चौंकते देख वे बोले, ''वाह बेटा! तुम्हें बचा लिया तो कैसे नासमझ बन रहे हो तीनों! अबे, ऐसे ही थोडे रिपोर्ट वापिस हो जाएगी चौकी से? हमें वहां जा कर मुंशी जी को भी तो बताना होगा कि जिसने एक्सीडेंट मारा था, वह कहां है, उसे क्यों नहीं लाये साथ में। वे पूछेंगे नहीं कि ऐसे कैसे छोड़ दिया तुझे? चल जल्दी से 150 रूपये और निकाल।''

आप सहज ही अंदाजा लगा सकते हैं, कि उनकी बातें सुन कर हम मित्रों की क्या हालत हुई होगी। हम सोच रहे थे कि मुसीबत टल गई, परन्तु ऐसा तो कतई नहीं था। अब समझ आया कि उनके सुलहनामे का क्या मतलब है। हमें चुप देख कर दूसरा पुलिसमैन शायद समझ गया कि हम पर अभी कुछ और मनोवैज्ञानिक दबाव बढ़ाने की आवश्यकता है, अतः एकदम से मेरे बड़े भाई से बोला, ''चलो दिवान जी, लगता है इसे आज रात हवालात की हवा और कुछ डन्डे की मार खिलानी ही होगी,

तभी इसकी समझ में आयेगा। सारी रात जब हवालात में रहेगा और सुबह इसके घरवाले 1500 रूपये की जमानत देकर छोड़ने के लिए हाथ जोडेंगे, तब मालूम पड़ेगा इसे। ले चलते हैं, देर भी बहुत हो गई है, मुंशी जी भी तो नाराज़ हो रहे होंगे, इतनी देर लगा दी एक बित्तेभर के लड़के को पकड़ कर लाने में।'' बस फिर तो मेरे भइया भी तेज आवाज में बोले, ''ठीक कहते हो यार, मैं तो इसे अपना छोटा भाई मानकर बचाना चाहता हूँ पर यह नहीं समझ रहा है तो चलो, चौकी ही ले चलते हैं इसे। '' हमने उनसे आग्रह करते हुए कहा कि आप खुद देख लो हमारी जेब बिलकुल खाली हैं, 150 रूपये और कहां से दें, परन्तु वह बोले, ''जहां से पहले लाये थे वहीं से और लेकर आओ।'' आखिर दोस्ती की परीक्षा सामने थी, अतः दोनों मित्र फिर चल दिए घर से 150 रूपये और लाने। मैं उन दोनों अंकल के साथ खड़ा सोच रहा था, पता नहीं क्या होगा, घर वाले भी 150 रूपये इतनी आसानी से क्यों देंगे? इतने रूपये तो हमें महीने-भर में नहीं मिलते थे और हम एक ही बारी में, एक साथ इतने रूपयों की मांग करेंगे, तो क्या मिल जायेंगे? बेकार ही फंस गए, न जाने क्या होगा? दोनों मित्रों के घर आस-पास तो थे

नहीं। राजीव का घर पीपल मंडी में था तो प्रदीप का घर मन्नुगंज में, और सफर तय करना था पैदल, सो देर तो लगनी ही थी। समय बीतता जा रहा था, तरह-2 की शंकाएं मन में सिर उठा रही थीं और वे दोनों थे कि हर 3-4 मिनट बाद दिल तोड़ने वाली बातें किए जा रहे थे। जब काफी समय बीत गया तो वही अधीर पुलिसमैन फिर बोला, ''दीवान जी! पहली बार तो इसके दोस्त आ गये थे, लेकिन अब मुझे तो लगता नहीं कि वे दोबारा इस पचड़े में फंसने आयेंगे। आखिर कब तक इंतजार करेंगे उनकी?'' मेरे प्रिय भइया भी दबाव बढ़ाते हुए बोले, ''ठीक है, 10-15 मिनट तक वे न आये तो ले चलेंगे इसे चौकी।''

मैं जानता था कि मेरे मित्र वापिस तो अवश्य आयेंगे, परन्तु इतने रूपये लाने में समय तो लगना ही था। और अंततः जीतना तो मेरे विश्वास ने ही था, 10 मिनट से पहले ही मेरे मित्र उनकी बातों को झूठा सिद्ध कर हमारे सामने थे। प्रदीप के पॉकेट से रूपये निकालते ही उन्होंने रूपये झपट लिये और बोले, ''यह लो स्कूटर की चाबी और चलो भागो यहां से, और हाँ ट्रिपल-राईडिंग नहीं, पैदल ही जाना, लाईसेंस भी नहीं होगा तुम्हारे पास।'' हमारी जान में जान आई, हमने अभी एक कदम भी नहीं बढ़ाया था कि, भइया फिर बोल पड़े, ''अबे, एक बात का और ख्याल रखना रूटीन चैकिंग के लिए हमें कभी भी तुम्हारे घर आना पड़ सकता है। ऐसा न हो कि अपने घर में तू हमें पहचानने से भी इंकार कर दे। याद रखियो, यह इकरारनामा हमारे पास ही है, तुझे हवालात की हवा खिलाने को काफी होगा।'' पुलिस का खौफ देखिए, वे दोनों तो कब के जा चुके थे और चार-2 सवारियों को ले जाने में सक्षम भारी-भरकम लैम्बे स्कूटर होने के बाद भी हम लड़खड़ाते कदमों से पैदल ही घर की ओर चल दिए। रास्ते में दोनों मित्रों ने बताया कि 80 रूपये राजीव अपनी माँ जी से और शेष 70 रूपये प्रदीप ने दोबारा झाई जी से लिये थे। शाम को घर से निकले थे और अब तो रात हो चुकी थी, स्वाभाविक ही था कि घर पर मेरी माँ अधीरता से मेरा इंतजार कर रही थीं। मुझे देखते ही माँ ने प्रश्न दाग दिया, ''कहाँ था इतनी देर से?'' अपने साथ घटित एक्सीडेंट की बात बताते ही मेरी माता जी एकदम गुस्से से बोलीं, ''हाय-हाय, बेचारे को ज्यादा चोट तो नहीं लगी? तुझे कितनी बार कहा है, स्कूटर धीरे चलाया कर, इतना भारी स्कूटर चलाना तेरे बस

की बात है? पर तुझे तो हमारी बात समझ ही नहीं आती।'' मुझे झल्लाहट भी हो रही थी और हँसी भी आ रही थी कि शारीरिक और जेब पर चोट तो हमने खाई है, और देखो मेरी माँ को उस मजदूर की तो चिंता हो रही है, परन्तु सामने खडे अपने पुत्र के माथे पर जमे खून की ओर उनका कोई ध्यान नहीं जा रहा है। तभी माँ ने मुझे अगला आदेश सुना दिया, ''चल अब भोजन कर ले और आने दे तेरे डैडी जी को वही सीधा करेंगे तुझे।''

भोजन करते समय मैं डैडी जी की डाँट के विषय में नहीं अपितु अपने नये भइया की कही बात ''रूटीन चैकिंग के लिए कभी भी हमारे घर आने'' के बारे में सोच रहा था। कुछ ही दिनों बाद मेरे भाई साहब का विवाह था। कहीं नये भइया सच में रूटीन चैकिंग के लिए हमारे घर आ गये तो मेरे माता-पिता पर क्या गुजरेगी और हमारे बंधु-बांधव न जाने मेरे विषय में क्या सोचेंगे, बस यही चिंता मुझे परेशान कर रही थी। मैं इसी सोच में डूबा चिंतातुर बैठा था कि मेरी माँ मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए बोलीं, यह तेरे माथे पर भी खून लगा है, तुझे भी चोट लगी है? और कहाँ-2 लगी है?'' मेरे यह बताने पर कि मेरे दोनों घुटनों पर भी चोट लगी है, माँ मेरा सिर सहलाते हुए बोली, ''बहुत दर्द हो रहा है न, चिंता मत कर एक-दो दिन में चोट ठीक हो जायेगी।'' अब मैं उन्हें क्या बताता कि असली दर्द चोट का नहीं चिंता का है। हर दिन बस इसी भय में बीत रहा था कि कहीं वे घर पर न आ जायें। हर पुलिसवाले को देखते ही यही लगता था कि शायद वे ही आ रहे हैं। खैर जैसे-तैसे दिन बीतते गये और मेरे भाई साहब का विवाह निर्विघ्न सम्पन्न हुआ और महीने-दो-महीने बीतते हम उन दोनों का चेहरा तो भूल गए, परन्तु उनकी रूटीन चैकिंग के लिए हमारे घर आने की चेतावनी नहीं भूले। पर हमारा डर निर्मूल साबित हुआ, वे हमें फिर कभी नहीं मिले और घर आने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता था।

उस घटना को घटित हुए कितने ही वर्ष बीत गये हैं। हम तीनों मित्र अपनी-2 पढ़ाई पूर्ण कर सरकारी नौकरी में नियुक्त हो गये। प्रदीप आज ओ0एन0जी0सी0, मुम्बई में तथा राजीव आई०आर०डी०ई०, देहरादून में कार्यरत है। यद्यपि वर्तमान में राजीव तो हमारे संपर्क में नहीं है, परन्तु प्रदीप और मेरे बीच वही मित्रता आज भी कायम है। उन

दोनों पुलिस वालों के चेहरे तो मुझे याद नहीं परन्तु आज भी उस घटना की हर बात मुझे अक्षरश: याद है और मुझे गर्व है अपने मित्रों की मित्रता पर जिसके कारण न केवल उस रात मैं हवालात की सैर करने से बच गया बल्कि मेरा भविष्य भी नष्ट होने से बच गया। परन्तु इस घटना की सबसे अधिक रोचक व मजेदार बात तो यह है कि "न जाने वह उन पुलिस वालों का डर था या हमारी नासमझी कि उस समय तो क्या, उसके बाद भी हमारे ध्यान में यह बात कभी नहीं आई कि हमारे घर का पता तो छोड़ो उन्होंने हमसे हमारा नाम तक नहीं पूछा था, फिर वे हमें ढूंढते हुए हमारे घर कैसे आ सकते थे?" मेरे मित्र शायद उस घटना को भूल चुके हों परन्तु मैं जानता हूँ कि अपने मित्रों के उस ऋण को मैं कभी चुका नहीं पाऊंगा। बहुत कुछ बदल गया है, तब से अब तक, बस नहीं बदली तो हमारी मित्रता, तेज ड्राइविंग की मेरी आदत और मेरा यह भ्रम कि "मैं एक एस्सपर्ट ड्राइवर हूँ"।

ꕥ ꕥ ꕥ

बाज की उड़ान और पुनर्स्थापना

जय सिंह,
सर्वेक्षण सहायक
तकनीकी अनुभाग (म.स.का.)

बाज लगभग 70 वर्ष जीता है, पर अपने जीवन के 40 वें वर्ष में आते आते उसे एक महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ता है। उस अवस्था में उसके शरीर के तीन प्रमुख अंग निष्प्रभावी होने लगते हैं । पंजे लम्बे और लचीले हो जाते हैं और शिकार पर पकड़ बनाने में अक्षम होने लगते हैं, चोंच आगे की ओर मुड़ जाती है, भोजन निकालने में व्यवधान उत्पन्न करने लगती है, पंख भारी हो जाते हैं और सीने में चिपकने के कारण पूरे खुल नहीं पाते हैं, उड़ानें सीमित हो जाती हैं। उसके पास तीन विकल्प बचते हैं, एक या तो देह त्याग दे, दो या अपनी प्रवृत्ति छोड़ गिद्ध की भांति त्यक्त भोजन पर निर्वाह करे, तीन या स्वयं को पुनर्स्थापना करें, आकाश के निर्द्वन्द्व एकाधिपति के रूप में । जहां प्रथम दो विकल्प सरल और त्वरित हैं वहीं तीसरा पीड़ादायी व लम्बा है।

बाज पीड़ा चुनता है और स्वयं को पुनर्स्थापित करने का निश्चय करता है। वह ऊंचें पहाड़ पर जाता है अपना घोंसला बनाता है और एकान्त में पूरी प्रक्रिया प्रारम्भ

करता है । सबसे पहले वह अपनी चोंच को चट्टान पर मार-मार कर तोड़ देता है, अपनी चोंच तोड़ने से अधिक पीड़ादायक कुछ भी नहीं पक्षीराज के लिए । तब वह प्रतीक्षा करता है चोंच के पुनः उग आने की, चोंच के पुनः उग आने के बाद वह अपने पंजे उसी प्रकार तोड़ देता है और प्रतीक्षा करता है नये पंजे उग आने की, नये पंजे और चोंच आ जाने के बाद वह अपने भारी पंखों को नोंच-नोंच कर निकालता है और प्रतीक्षा करता है कि पुनः नये पंख उग आने की ।

150 दिनों की पीड़ा और लम्बी प्रतीक्षा के बाद उसे मिलती है भव्य और ऊंची उड़ान, बिल्कुल पहले जैसे नई । इस पुनर् स्थापना के बाद वह 30 वर्ष और जीवित रहता है । पूरी ऊर्जा सम्मान और गरिमा के साथ। प्रकृति हमें सिखाने बैठी है, बूढे बाज की युवा उड़ान में जिजीविषा के समर्थ स्वप्न दिखायी दे जाते हैं । 40 वर्ष की अवस्था तक आते-आते हमारा व्यक्तित्व भी ढ़ीला पड़ने लगता है, प्राय जीवन ही समाप्त लगने लगता है । हमें भी अपने जीवन में विवशता भरें अति लचीलेपन को त्याग कर नियन्त्रण दिखाना होगा, आलस्य उत्पन्न करने वाली वक्र मानसिकता और भूतकाल में जकड़े अस्तित्व के भारीपन को त्याग कर बाज की भांति पुनर्स्थापित करने का संकल्प करना होगा ।

इसके लिए सीधा व सरल मार्ग तथागत भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित किया गया है, 'विपष्यना'। यह ध्यान की वह पद्धति है जिसके द्वारा हम अपने मन को पवित्र एवं स्वच्छ मस्तिष्क को संवेदनशील तथा शरीर को क्रियाशील और रूग्ण रहित करके नये उन्मुक्त यौवन को पा सकते हैं। यह योग साधना 150 दिन की न सही एक माह की और यदि एक माह भी न सही तो एक सप्ताह की जा सकती है। इसके द्वारा हम स्वयं को पुनर्स्थापना करके पुनः नवयौवन प्राप्त कर सकते हैं ।

ꕥ ꕥ ꕥ

यादें

अ0 डेविड, प्रवर श्रेणी लिपिक
मुद्रण क्षेत्र, हैदराबाद ।

हर चीज जमाने की जहां पर थी, वहीं हैं
इक तू ही नहीं हैं

नजरें भी वही और नजारे भी वही हैं
खामोश फिजाओं के इशारे भी वही हैं
कहने को तो सब कुछ है, मगर कुछ भी नहीं है

हर अश्क में खोई हुई खुशियों की झलक है
हर सांस में बीती हुई घडियों की कसक है
तू चाहे जहां भी हो, तेरा दर्द यहीं है

हसरत नहीं, अरमान नहीं, आस नहीं है
यादों के सिवा कुछ भी मेरे पास नहीं है
यादें भी रहें या न रहें, किसको यकीन है।

ꕥ ꕥ ꕥ

नन्हीं-सी लड़की का प्यार

धीरज कुमार श्रीवास्तव
अवर श्रेणी लिपिक
सतर्कता अनुभाग म0स0का0 ।

मैं एक दुकान में खरीदारी कर रहा था, तभी मैंने उस दुकान के कैशियर को एक 5-6 साल की लड़की से बात करते हुए देखा। कैशियर बोलाः- 'माफ करना बेटी, लेकिन इस गुड़िया को खरीदने के लिए तुम्हारे पास पर्याप्त पैसे नहीं है। फिर उस छोटी सी लड़की ने मेरी ओर मुड़ कर मुझसे पूछाः- 'अंकल क्या आपको भी यही लगता है कि मेरे पास पूरे पैसे नहीं हैं मैंने उसके पैसे गिने और उससे कहाः- ''हां बेटे, यह सच है कि तुम्हारे पास इस गुड़िया को खरीदने के लिए पूरे पैसे नहीं हैं''। वह नन्हीं सी लड़की अभी भी अपने हाथों में गुड़िया थामें हुए खड़ी थी। मुझसे रहा नहीं गया इसके

बाद मैंने उसके पास जाकर उससे पूछा कि यह गुड़िया वह किसे देना चाहती है । इस पर उसने उत्तर दिया कि यह वो गुड़िया है, जो उसकी बहन को बहुत प्यारी है और वह इसे, उसके जन्मदिन के लिए उपहार में देना चाहती है। यह गुड़िया पहले मुझे मेरी मम्मी को देना है, जो कि बाद में जाकर मेरी बहन को दे देंगी "। यह कहते-कहते उसकी आँखें नम हो आई थी मेरी बहन भगवान के घर गयी है ...और मेरे पापा कहते हैं कि मेरी मम्मी भी जल्दी ही भगवान से मिलने जाने वाली हैं तो, मैंने सोचा कि क्यों न वो इस गुड़िया को अपने साथ ले जाकर, मेरी बहन को दे दें...।" मेरा दिल धक्क-सा रह गया था। उसने ये सारी बातें एक साँस में ही कह डालीं और फिर मेरी ओर देखकर बोली - "मैंने पापा से कह दिया है कि मम्मी से कहना वो अभी न जाएं। वो मेरा, दुकान से लौटने तक का इंतजार करें। फिर उसने मुझे एक बहुत प्यारा सा फोटो दिखाया जिसमें वह खिलखिलाकर हँस रही थी। इसके बाद उसने मुझसे कहा- "मैं चाहती हूं कि मेरी मम्मी, मेरी यह फोटो भी अपने साथ ले जायें, ताकि मेरी बहन मुझे भूल नहीं पाएं। मैं अपनी मम्मी से बहुत प्यार करती हूं और मुझे नहीं लगता कि वो मुझे ऐसे छोड़ने के लिए राजी होंगी, पर पापा कहते हैं कि उन्हें मेरी छोटी बहन के साथ रहने के लिए जाना ही पड़ेगा। इसके बाद फिर से उसने उस गुड़िया को गमगीन आँखों से खामोशी से देखा। मेरे हाथ जल्दी से अपने बटुए (पर्स) तक पहुंचे और मैंने उससे कहा- "चलो एक बार और गिनती करके देखते हैं कि तुम्हारे पास गुड़िया के लिए पर्याप्त पैसे हैं या नहीं।" इसके बाद मैंने उससे नजरें बचाकर कुछ पैसे उसमें जोड़ दिए और फिर हमने उन्हें गिनना शुरू किया। ये पैसे उसकी गुड़िया के लिए काफी थे यही नहीं, कुछ पैसे अतिरिक्त बच भी गए थे। नन्ही सी लड़की ने कहाः- "भगवान का लाख-लाख शुक्र है मुझे इतने सारे पैसे देने के लिए! फिर उसने मेरी ओर देख कर कहा कि मैंने कल रात सोने से पहले भगवान से प्रार्थना की थी कि मुझे इस गुड़िया को खरीदने के लिए पैसे दे देना, ताकि मम्मी इसे मेरी बहन को दे सकें और भगवान ने मेरी बात सुन ली। इसके अलावा मुझे मम्मी के लिए एक सफेद गुलाब खरीदने के लिए भी पैसे चाहिए थे, पर मैं भगवान से इतने ज्यादा पैसे मांगने की हिम्मत नहीं कर पायी थी पर भगवान ने तो मुझे इतने पैसे दे दिए हैं कि अब मैं गुड़िया के साथ-साथ एक सफेद गुलाब भी खरीद सकती हूं ! मेरी मम्मी को सफेद गुलाब बहुत पसंद है। "फिर हम वहां से निकल गए। मैं अपने दिमाग से उस छोटी-सी लड़की को निकाल नहीं पा रहा था। फिर, मुझे दो दिन पहले स्थानीय समाचार पत्र में छपी एक घटना याद आ गयी जिसमें एक शराबी ट्रक ड्राईवर के बारे में लिखा था। जिसने नशे की

हालत में मोबाइल फोन पर बात करते हुए एक कार चालक महिला की कार को टक्कर मार दी थी, जिसमें उसकी 3 साल की बेटी की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गयी थी। अब एक महत्वपूर्ण निर्णय उस परिवार को ये लेना था कि उस महिला को जीवन रक्षक मशीन पर बनाए रखना है अथवा नहीं ? क्योंकि वह कोमा से बाहर आकर, स्वस्थ हो सकने की अवस्था में नहीं थी। "क्या वह परिवार इसी छोटी-लड़की का ही था ?" मेरा मन रोम-रोम काँप उठा। मेरी उस नन्हीं लड़की के साथ हुई मुलाकात के 2 दिनों बाद मैंने अखबार में पढ़ा कि उस महिला को बचाया नहीं जा सका, मैं अपने आप को रोक नहीं सका और अखबार में दिए पते पर जा पहुंचा, जहाँ उस महिला को अंतिम दर्शन के लिए रखा गया था। वह महिला श्वेत धवल कपड़ों में थी अपने हाथ में एक सफेद गुलाब और एक छोटी-सी लड़की का वह फोटो लिए हुए और उसके सीने पर रखी हुई थी - वही गुड़िया। मेरी आँखे नम हो गयी, मैं नम आँखें लेकर वहां से लौटा। उस नन्हीं-सी लड़की का अपनी माँ और उसकी बहन के लिए जो प्यार था, वह शब्दों में बयान करना मुश्किल है। और ऐसे में, एक शराबी चालक ने अपनी घोर लापरवाही से क्षण-भर में उस लड़की से उसका सब कुछ छीन लिया था..!!!

इस कहानी से सिर्फ और सिर्फ एक पैगाम देना चाहता हूं कृपया -----
"कभी भी शराब पीकर और मोबाइल पर बात करते समय वाहन ना चलायें क्योंकि आपका आनन्द किसी के लिए श्राप साबित हो सकता है ।" ꕥ ꕥ ꕥ

चुटकुले

धीरज कुमार श्रीवास्तव
अवर श्रेणी लिपिक
सतर्कता अनुभाग म0स0का0 ।

(1) एक परिवार को फोन का बिल बहुत अधिक मिला तो परिवार के मुखिया ने इस पर चर्चा के लिए घर के सब लोगों को बुलाया

पतिः- यह तो हद हो गई । इतना ज्यादा बिल..... मैं तो घर का फोन यूज हीं नहीं करता ... सारी बातें ऑफिस के फोन से करता हूं ।

मां- मैं भी ज्यादातर ऑफिस का हीं फोन यूज करती हूं। सहेलियों के साथ इतनी सारी बातें घर के फोन से करूंगी तो कैसे चलेगा ।

बेटाः- मां आपको तो पता हीं है कि मैं सुबह सात बजे घर से ऑफिस के लिए निकल जाता हूं । जो बात करनी होती है ऑफिस के फोन से करता हूं।

बेटीः- मेरी कम्पनी ने मेरे डेस्क पर भी फोन दिया हुआ है... तो सारी कॉल उसी से करती हूं । फिर ये घर के फोन का बिल इतना आया कैसे?

घर की नौकरानी चुपचाप खड़ी सुन रही थी । सब की प्रश्न भरी निगाहें नौकरानी की ओर उठी...

नौकरानी बोलीः- तो और क्या... आप सभी तो अपने काम करने की जगह का फोन इस्तेमाल करते हैं ... मैनें भी वही किया तो क्या?

(2) डाक्टरः- आपके तीन दांत कैसे टूट गए
मरीजः- पत्नी ने कड़क रोटी बनाई थी ।
डाक्टरः- तो खाने से मना कर देते ।
मरीजः- वही तो किया था ।

(3) एक छात्र ने गणित के अध्यापक से कहा सर –
अंग्रेजी के अध्यापक ! तो अंग्रेजी में बातें करते है |
आप भी गणित में बात क्यों नहीं करतें ?
गणित अध्यापक ने कहा –ज्यादा तीन पांच न कर फौरन नौ दो ग्यारह हो-जा नहीं तो चार पांच रख दूंगा तो छठी का दूध याद आ जाएगा |

ꕥ ꕥ ꕥ

विचार-मंथन

सकंलन कर्ता- संसार सिंह
अधीक्षक सर्वेक्षक,
महासर्वेक्षक का कार्यालय ।

- संसार का सबसे बड़ा दिवालिया वह है जिसने उत्साह को खो दिया ।
- बिगड़ा हुआ मन सबसे बड़ा शत्रु और सधा हुआ मन सबसे बड़ा मित्र है।
- कुछ करने से पहले सोचना बुद्धिमता, करते समय सोचना सतर्कता और करने के बाद सोचना मूर्खता है ।
- अनीति और असफलता में से एक चुनना पड़े तो असफलता को ही चुनना चाहिये।

.

ईमानदारी से जीवन व्यतीत करने वालों को थोड़ा तपस्या का जीवन बिताना पड़ता है।

- भावपूर्ण व्यवहार से व्यक्तित्व जीवंत होता है, उसमें नई नई कोपलें फूटती है और प्रसून खिलते हैं। व्यक्ति को प्रवर ओजस्वी, तेजस्वी बनाने के लिये आवश्यक है चरित्र - चिन्तन एवं व्यवहार की उत्कृष्टता ।
- भय मानसिक स्थिति है और अन्तः को मजबूत बनाकर उस पर विजय प्राप्त की जा सकती है । मन सशक्त है तो वास्तविक भय बौना लगता है ।
- सोते समय पैर दक्षिण दिशा की ओर न हों । ऐसा करने से दिल व दिमाग पर दबाव नहीं पडेगा । यह तथ्य सब वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार कर लिया है ।
- जब परछाई शरीर से लम्बी होने लगे तो समझना चाहिये कि सूर्य अस्त होने वाला है ।
- पांच काम सदा ठीक समय पर करने चाहिये प्रातः उठना - शौचकार्य, स्नान, भोजन और सोना । यह स्वस्थ बने रहने का मूल मंत्र है ।
- देखें बिना जल न पीएं, जाने बिना मित्रता न करें, हाथ धोये बिना भोजन न करें, पूछे बिना राय न दें, अपने से बड़ों का तिरस्कार न करें, बलवान से शत्रुता न करें, दुष्ट से मेलजोल न करें, अजनवी पर एकदम विश्वास न करें ।
- अच्छे कार्य की प्रशंसा करो, शारीरिक भूगोल की नहीं । तुम सुन्दर हो इसलिये अच्छे लगते हो या अच्छे हो इसलिये सुन्दर लगते हो ।
- व्यक्ति की कटु आलोचना ही उसकी सबसे बड़ी हितैषिणी होती है तथा बेईमान दोस्त से ईमानदार दुश्मन अच्छा होता है।
- कुछ निर्णय ऐसे होते हैं, जिन्हें बदलना होता है पर इतना भी नहीं कि उसका स्वरूप ही बदल जाए ।
- अपने आत्मविश्वास को टूटने न दें और दूसरों के आत्मविश्वास को कभी ठेस न पहुंचाएं । आपके विचार खुली किताब होने चाहिएं ।
- उचित को जानते हुए भी अमल न करना यह दर्शाता है कि मनुष्य में साहस का अभाव है ।

ꕥ ꕥ ꕥ

अखिल भारतीय संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक एवं तकनीकी दो दिवसीय संगोष्ठी दिनांक 3-4 फरवरी 2014 को रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी प्रयोगशाला रायपुर, देहरादून में महासर्वेक्षक कार्यालय के डॉ0 एन0 के0 तिवारी पेपर पढ़ते हुए।

असली ज़रूरत

संकलक : रामकृष्ण मोरे
आटिफिसर (हिन्दी अनुभाग)
दक्षिणी मुद्रण वर्ग ।

एक महत्वपूर्ण बात है कि यह संसार ज़रूरतों के आधार पर चल रहा है। मनुष्य की साधारण ज़रूरतें हैं। भूख लगती है तो खाना चाहिए। प्यास लगती है तो पानी चाहिए। जब आदमी थक जाता है, तो उसे विश्राम चाहिए। नींद आती है, सोने की जगह चाहिए। इन ज़रूरतों के कारण संसार में कितना बिजनेस होता है। आपको सोने के लिए जगह चाहिए, चारपाई होनी चाहिए, इसलिए चारपाई खरीदनी पड़ेगी। खाने के लिए भोजन चाहिए तो सब्जी मंडियां हैं। खाना पकाना पड़ेगा इसलिए माइक्रोवेव ऑवेन बनाने वाले हैं, गैस सप्लाई करने वाले हैं। गैस को एक जगह से

दूसरी जगह ले जाया जाएगा, तो कारें भी हैं, ट्रक भी हैं। सोचने की बात है, दुनिया चल रही है तो मात्र इसलिए कि मनुष्य की कुछ जरूरतें हैं और उनको पूरा होना है। ज़रूरतें साधारण चीजें नहीं हैं। फिर मनुष्य ने सोचा कि इन ज़रूरतों को पूरा करते हुए खूब धनवान हो सकता हूं,तो उसे इन ज़रूरतों को बनाना चाहिए। वस्तुत: जरूरत मनुष्य को है नहीं पर मनुष्य ही इन जरूरतों को बनाता है। इन ज़रूरतों को पूरा करने के लिए हम पैसा देते हैं। इसी वजह से हम अमीर और गरीब होते हैं।

हमारी प्रवृत्ति है कि हम जीवन में एक साथ सब कुछ पा लेना चाहते हैं और अपने विचारों के साथ दुनिया में आगे बढ़ते हैं । कई बार हम अपने विचारों से दुनिया की हर एक चीज को पकड़ना चाहते हैं परंन्तु कुछ चीजें ऐसी हैं कि उनका सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। एक साधारण उदाहरण है- जैसे भोजन। भोजन क्यों आवश्यक है? रसोई क्यों आवश्यक है? क्योंकि मनुष्य को खाने की जरूरत है। अगर मनुष्य को भूख नहीं लगती तो वह क्यों खाएगा? जब मनुष्य को भूख लगती है, तो उसे वह महसूस होती है। जब उसके शरीर को उन पदार्थों की जरूरत पड़ती है, जिनसे उसके शरीर का संचालन हो तो उसके लिए बनाने वाले ने मनुष्य में भूख भी बनायी। मनुष्य को भूख लगती है तो भोजन चाहिए। भोजन मिल सके, इसीलिए मनुष्य ने रसोई की रचना की, ताकि वहां उसका खाना पक सके। अब रसोई में रसोइया भी चाहिए जो खाना पका सके ताकि उसकी भूख शांत हो। कड़ाही, पतीली, चम्मच आदि चीजों का अगर उसने आविष्कार किया तो इसलिए किया ताकि वह सुविधापूर्वक खाना बना सके और अपनी भूख को संतुष्ट कर सके। बात यहीं तक सीमित नहीं रह जाती है। इससे आगे भी बहुत कुछ है, क्योंकि अगर सब्जी बनेगी तो किसी न किसी को सब्जियों को उगाना भी पड़ेगा। सब्जियां बढ़िया तरीके से मनुष्य उगा पाये, इसका भी उसने आविष्कार किया, और करता रहता है। आखिर एक मूल मकसद है- भूख को शांत करना। अनेक विश्वविद्यालय हैं जहां वर्षों लोग पढ़कर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करते हैं और अपने विषय के डाक्टर बनते हैं। उस उपाधि से पता चलता हैं कि क्या उनका कार्य क्षेत्र है, किसमें उन्होंने डॉक्टरेट प्राप्त की है। ये सब कुछ इसीलिए है ताकि वे नई-नई चीजों का आविष्कार करके ऐसे-ऐसे बीज बनायें, जिनसे बढ़िया-बढ़िया चीजें उत्पन्न हों। बढिया-बढिया फल हों। छोटे-छोटे नहीं, बड़े-बड़े फल हों, ताकि किसान को प्रति हेक्टेयर या प्रति एकड़ जमीन से ज्यादा से ज्यादा फल मिले। इसके लिए लोग खूब पैसा खर्च करते हैं, ताकि वहां से उनको बढिया से बढिया सब्जियां मिलें। किसान तो सिर्फ फसल उगाता है। फिर और लोग आते हैं, फसल को निकालते

हैं, डिब्बों में डालते हैं, ट्रकों में ले जाते हैं। दुकानें बनी हुई हैं, बड़े-बड़े सुपर मार्केट बने हुए हैं। हिंदुस्तान से इंग्लैंड के लिए प्रति दिन सब्जियां जाती हैं। इन सबका आखिर क्या नतीजा निकलता है? वही भूख की शांति का, क्योंकि भूख की तृप्ति मनुष्य की जरूरत है।

मनुष्य का संगठन बल है- सोसायटी। वही बोझ डालती है कि तुम्हारी भी कुछ ज़रूरतें हैं। सब लोग जरूरतों को पूरा करने के लिए हर दिन कुछ न कुछ करते रहते हैं। छोटी सी बात है कि जब रोड पर हों और ट्रैफिक के बीच में फंसे हों, तब आभास होता है कि यह सब किसी जरूरत को पूरा करने के लिए हो रहा है। ज़रूरत क्या है, आपको नहीं मालूम, फिर भी चिंतित हैं कि किसी को कहीं जाना हैं, किसी को कहीं जाना है। यह सब ज़रूरतों को पूरा करने के लिए हो रहा है। अपनी ज़रूरत को पूरा करने के लिए मनुष्य क्या-क्या नहीं करता है। अगर आप मेरी बात से सहमत हैं तो ज़रूरत ही एक ऐसा इंजन है जो सारे संसार के पीछे लगा हुआ है और मनुष्य को परेशान करता रहता है। वे ज़रूरतें, जो मनुष्य की निजी ज़रूरतें हैं, उन्हें पूरा करने के लिए मनुष्य कभी परेशान नहीं होता है। परंतु निजी ज़रूरतें, जो सोसायटी ने, जो इस दुनिया ने हमारे ऊपर डाल रखी हैं, उनको पूरा करने के लिए मनुष्य जरूर परेशान होता है। वह भगवान से भी प्रार्थना करता है, 'हे भगवान ! मेरे लिए ऐसा कर दो, वैसा कर दो।' यानी आदमी ने भगवान को भी एक दुकानदार बना दिया। हम एक लंबी लिस्ट लेकर के भगवान से प्रार्थना करते हैं, 'हे भगवान ! मेरी अच्छी नौकरी लगा दे, प्रमोशन दिला दे। मुझे एक बेटा दे दे, एक कार दे दे ।'

नारद मुनि का एक किस्सा आता है। एक बार वे एक स्वयंवर में गए। उन्होंने वहां एक लड़की देखी जो बड़ी सुंदर थी। भगवान से नारद मुनि ने प्रार्थना की, 'भगवन् मुझे इतना सुंदर बना दो कि यह लड़की किसी और के गले में वरमाला न डाले। सीधे मेरे पास आये और मेरे गले में वर माला डाले। जिसमें मेरा हित हो वही करना।' अब भगवान तो भगवान हैं। उनकी शिकायत कौन करेगा उन्होंने नारद मुनि को बंदर का मुंह दे दिया और स्वयं भी स्वयंवर में आ गये। परिणाम यह हुआ कि उस लड़की ने वरमाला भगवान के गले में डाल दी। नारद जी उस दिन इतने चिढ़े कि उन्होंने उल्टा भगवान को शाप दे दिया। इसी तरह लोगों की भी अपनी लिस्टे हैं, क्योंकि उनकी ज़रूरतें हैं और उन्हें उन ज़रूरतों को पूरा करना है। परंतु क्या कभी आपने सोचा कि आपकी असली ज़रूरत क्या हैं लोग अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए लगे हुए हैं, परंतु यह कभी नहीं सोचते है कि 'यह मेरा जीवन है, मैं जिंदा हूं, मेरे अंदर श्वास

आता है, मेरे अंदर श्वास जाता है। एक सीमित समय है जब तक मैं जीवित रहूंगा, उसके बाद मैं यहां नहीं रहूंगा। मुझे नहीं मालूम कि वह समय कब आएगा, पर इतना ज़रूर मालूम है कि आएगा और जब तक मैं जीवित हूं, मेरी असली ज़रूरत क्या है? नकली नहीं, इस संसार की दी हुई ज़रूरतें नहीं, मेरी असली ज़रूरत क्या है? मैं अपने जीवन में अपनी असली ज़रूरत को पूरा करता जाऊं। मेरी सारी ज़रूरतें तो कभी पूरी नहीं होंगी।' चाहे कितना भी मनुष्य परिश्रम कर ले, वह अपनी सारी ज़रूरतों को पूरा नहीं कर पायेगा। जब वह सारी ज़रूरतों को पूरा नहीं कर पायेगा, तो कम से कम एक मुख्य ज़रूरत तो जरूर होगी, जिसको वह पूरा कर सकता है।

इस संसार में सुनाने वालों की कमी नहीं है। सब सुनाते हैं, 'खाली हाथ आये थे और खाली हाथ जाना है।' अगर ऐसा ही है तो फिर बनाने वाले ने हाथ ही क्यों दिए? जब खाली हाथ आए थे और खाली हाथ जाना है, तो इन सबका क्या फायदा? इस शरीर का क्या फायदा? इस समय का क्या फायदा? इस गगन का क्या फायदा? फलों के अंदर जो मिठास डाली, उसका क्या फायदा? सच्चाई क्या है? एक समय था कि कुछ नहीं था और एक समय आया कि कुछ था, जो आप अब हैं और एक समय आयेगा कि कुछ नहीं रहेगा। अपनी असली ज़रूरत को पूरा कीजिए और असली ज़रूरत क्या है, यह आप अपने हदय से पूछिए, क्योंकि अनुभव का कोई विकल्प नहीं होता।

ꕥ ꕥ ꕥ

मातृ-शक्ति

संकलन : सुस्मिता देव
अवर श्रेणी लिपिक

स्वामी विवेकानन्द के जीवन की एक घटना है। अमेरिका में उनसे पूछा गया, 'स्त्री विषयक हमारा भाव तथा भारतीयों के भावों में क्या अंतर है स्वामी जी का उत्तर रहा, भारत में अपनी पत्नी के सिवाय सभी स्त्रियों को माता रूप में माना जाता है तो पाश्चात्यों में अपनी जन्मदायिनी मां को छोड़ सभी महिलाएं पत्नी रूप मानी जाती है।' विवेकानन्द के इन शब्दों में कुछ भारतीय लोगों को अतिशक्ति का अनुभव होता है किन्तु दोनो देशों में विवाह के जो नियम तथा रीतिरिवाज है उनके अनुसार किया हुआ स्वामी जी का यह कथन स्त्री के विषय में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृतियों का अंतर सब समझ सकें ऐसी सरल और स्पष्ट भाषा में है यह निश्चित है । स्त्री को सृष्टि की

सृजन शक्ति के रूप में भारतीय देखते हैं । किन्तु 'मातृशक्ति' का गहराई से अध्ययन न किये हुए पाश्चात्य जगत में उसको उपभोग की वस्तु मानते रहे हैं।

सोलहवीं शताब्दी में पाश्चात्य देशों ने विश्वभर में अपने साम्राज्य का निर्माण करने के प्रयत्न प्रारंभ किये और साम्राज्य के साथ पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भी विश्वभर में फैला । स्त्री विषय में पाश्चात्यों के विचारों का प्रचार गत चार सौ (400) वर्षों से चल रहा है । अनेक देशों के निवासी और कुछ प्रमाण में भारतीय भी इस प्रचार के शिकार हो गये हैं । साम्राज्य निर्माण करने वाले प्रमुख पाश्चात्य देश थे, इंग्लैंड, फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन और हालैंड । ये सब देश अपने साम्राज्य बीसवीं शताब्दी में खोकर केवल अपने देशों तक सीमित हो गये हैं । मानव सृष्टि तथा संपूर्ण प्राणी जीवन के लिए पाश्चात्यों में भी अधिकाधिक वेग से बात पकडता जा रहा है । अनेक विद्वान अन्य किसी उपयुक्त जीवन-प्रणाली को ढूंढ रहे हैं ।

पाश्चात्यों के विश्व विस्तार का चार सौ (400) वर्षों का यह अनुभव है । भारतीय भी मानवों को कर्तव्यबोध कराने वाली अपनी संस्कृति का प्रचार विश्व भर में गत हजारों वर्षों से कर रहे है । इस प्रचार के गत कम से कम चार हजार वर्षों के ठोस आधार आज उपलब्ध है । पृथ्वी के पांचों खंडों में वे पहुँचे थे । जहॉ-जहॉ वे पहुँचे वहां के स्थानीय लोग भारतीयों के संस्कृति-प्रचार तथा तद्रुरूप व्यवहार से इतने दीर्घ काल तक संतुष्ट रहे । उन्होंने स्वयं वह व्यवहार अपनाया और समाजिक जीवन में सुख-शांति का अनुभव किया । उनके मन में भारतीयों के विषय में सर्वदा आदर रहा है।

विश्वभर में भारतीय संस्कृति के इतने दीर्घकालीन आकर्षण का कारण है प्राचीन भारतीय ऋषि मुनियों द्वारा किया हुआ संपूर्ण सृष्टि का मौलिक अध्ययन । इस अध्ययन के आधार पर प्रत्येक मानव का देने योग्य संस्कार उन्होंने निर्धारित किये और उन संस्कारों के अनुसार सभी भारतीय व्यवहार करें इसकी सफल व्यवस्था की । इस सुदीर्घ अनुभव के कारण निर्भीक दृढ़ विश्वास से ही स्वामी विवेकानन्द अमेरिका में उपर्युक्त कटुसत्य का विश्लेषण कर सके ।

ऋषियों के सृष्टि संबंधी मौलिक अध्ययन के असंख्य विषयों में से एक विषय इस लेख में लिया गया है । स्त्री और पुरूष में केवल स्त्री को ही गर्भधारण का कार्य सृष्टि निर्माता ने दिया है । सृष्टिकर्ता ने स्त्री की शरीर रचना गर्भ धारण के लिए अत्यन्त उपयुक्त रूप से की है यही नहीं तो गर्भधारण, गर्भपोषण और आगे संतति के योग्य विकास के लिए आवश्यक मानसिक और बौद्धिक गुण भी उसी को दिये हैं । यही है मातृशक्ति, सृष्टिनिर्माता का सृजन सामर्थ्य । विधाता निर्मित इस मातृशक्ति का सृष्टि रहस्य हमारे ऋषियों ने गहराई से समझा था । पुरूष भली भांति समझें तथा तद्रुरूप व्यवहार करें, सृष्टि के विधान में सहायक हो इसकी चिरकाल टिकने वाली व्यवस्था भी उन्होंने उस सुदूर भूतकाल में निर्मित की जो आज तक सतत् से चली आ रही है ।

मातृशक्ति के इस मौलिक अध्ययन से विश्व-सृजन का चिरंतन सत्य स्पष्ट हुआ है । विश्व की किसी भी प्रकार की परिस्थिति में वह सत्य शाश्वत है, सनातन है । इस सत्य को ठीक प्रकार से समझने वालों द्वारा, भोगवादी तथा व्यक्तिनिष्ठ पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित विश्वभर के मानव भी योग्य मार्ग पर आ सकेंगे । तभी हम अपने मानव जन्म को सफल कर सकेंगे ।

ꕥ ꕥ ꕥ

महासर्वेक्षक कार्यालय में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन एक संक्षिप्त रिपोर्ट।

महासर्वेक्षक के कार्यालय में भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियम, नियम एवं निर्देशों के अनुपालन तथा कार्यान्वयन हेतु मुख्यालय स्तर पर सतत् प्रयास किए गए जिसकी संक्षिप्त रिपोर्ट निम्नवत् है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकों का आयोजन:-

वर्ष 2013-14 के दौरान महासर्वेक्षक के कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया गया उक्त बैठकों में संघ का

राजकीय कार्य हिन्दी में करने के लिए सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विचार-विमर्श किया गया।

वार्षिक हिन्दी गृहपत्रिका "सर्वेक्षण" दर्पण के दसवें अंक का प्रकाशनः-

राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के हिन्दी लेखन को सृजनात्मक बनाने के उद्देश्य से दिनांक 30 सितम्बर, 2013 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका सर्वेक्षण दर्पण के अंक 10 का विमोचन भारत के महासर्वेक्षक डॉ0 स्वर्ण सुब्बा राव द्वारा किया गया।

हिन्दी पत्राचार

वर्ष 2013-2014 के दौरान संघ का राजकीय कार्य हिन्दी में करने के लिए म.स.का. में सघन उपाय किए गए। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत सभी कागजात द्विभाषी जारी किए गए। हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया गया। जिसके फलस्वरूप वर्ष 2013 की अवधि में कार्यालय द्वारा 'क' 'ख', 'ग' क्षेत्र के साथ हिन्दी पत्राचार का प्रतिशत निम्नवत् रहा:-

अवधि	'क' क्षेत्र में	'ख' क्षेत्र मे	'ग' क्षेत्र में
30 जून, 2013	83.9%	84.6%	83.2%
30 सितम्बर, 2013	88.8%	90.9%	83.5%
31 दिसम्बर, 2013	90.4%	83.5%	80.3%
31 मार्च, 2014	86.1%	82.3%	81.7%

प्रशिक्षण:- रिपोर्टाधीन अवधि में हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत कार्यालय के 3 अवर श्रेणी लिपिकों ने हिन्दी टाइपिंग की परीक्षा उत्तीर्ण की।

प्रोत्साहन योजना

वर्ष 2013-2014 के दौरान सरकारी कामकाज मूलरूप से हिन्दी में करने के लिए टिप्पण और आलेखन तथा हिन्दी टाइपिंग की प्रोत्साहन योजना लागू रही हिन्दी में टिप्पण और आलेखन की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत कार्यालय के 01 कार्मिक तथा हिन्दी टाइपिंग प्रोत्साहन भत्ता योजना के अंतर्गत 05 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया।

कार्याशालाः-

महासर्वेक्षक कार्यालय में दिनांक 20.09.2013 को अधिकारियों/कर्मचारियों को कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य प्रशिक्षण देने हेतु हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

निरीक्षण:-

दिनांक 28.05.2013 को क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उ०) गाजियाबाद के सहायक निदेशक (रा०भा०) के द्वारा महासर्वेक्षक कार्यालय में हिन्दी के कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण किया गया ।

हिन्दी पखवाड़ा/समारोह का आयोजन

महासर्वेक्षक कार्यालय में 16 से 30 सितम्बर 2013 तक हिन्दी दिवस/पखवाड़ा मनाया गया। विभिन्न हिन्दी विषयक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को पुरस्कृत करने के लिए 30 सितम्बर, 2013 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सारांश डिजिटल बोर्ड का शुभांरभ किया गया । समारोह की अध्यक्षता भारत के महासर्वेक्षक डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव ने की। समारोह का शुभारंभ महासर्वेक्षक महोदय ने दीप प्रज्वलित कर किया। तत्पश्चात् केन्द्रीय विद्यालय की छात्राओं द्वारा वंदना-गान के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया।

सहायक निदेशक (रा.भा.) ने वर्ष 2012-2013 के दौरान महासर्वेक्षक कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। भारत के महासर्वेक्षक महोदय ने हिन्दी विषयक प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं अनुभाग में हिन्दी में सराहनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों को पुरस्कृत किया। ꕥ ꕥ ꕥ

हिन्दी विषयक प्रतियोगिताओं का आयोजन

महासर्वेक्षक कार्यालय में 16 सितम्बर से 23 सितम्बर, 2013 तक आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नवत् है :-

(1) <u>हिन्दी में श्रुतलेख (डिक्टेशन)</u>

(2) (ग्रुप 'ए' अधिकारियों के लिए(

1) श्रीमती जसपाल कौर प्रद्योत,निदेशक(प्रशा०एवं वित्त) - प्रथम
2) श्री रविन्द्र कुमार, अधीक्षक सर्वेक्षक - द्वितीय
3) श्री डी० एन० पाठक, अधीक्षक सर्वेक्षक - तृतीय
4) श्री राजन कुमार निगम, उप महासर्वेक्षक - प्रोत्साहन

5) मेजर जनरल अनिल कुमार, अपर महासर्वेक्षक - विशेष प्रोत्साहन
6) श्री संसार सिंह, अधीक्षक सर्वेक्षक - विशेष प्रोत्साहन
7) श्री महेश गौड, सहायक महासर्वेक्षक - विशेष प्रोत्साहन

2 **<u>हिन्दी निबंध :-</u>**

1) श्री आर० के० थपलियाल,अधि0सर्वे0,तकनीकी अनुभाग - प्रथम
2) श्री अमित कुमार वर्मा, प्र० श्रे० लि०, विधिक अनुभाग - द्वितीय
3) श्री मुनीश कोहली, प्र०श्रे०लि०, स्थापना०१ - तृतीय
4) श्री विनोद मिश्रा, प्र०श्रे०लि०, विधिक अनुभाग - प्रोत्साहन

3 **<u>हिन्दी में टिप्पण और आलेखन :-</u>**
(तकनीकी संवर्ग के लिए)

1) श्री जय सिंह, सर्वेक्षण सहायक, तकनीकी अनुभाग - प्रथम
2) श्री इन्द्रेश सचदेवा, मानचित्रकार, तकनीकी अनुभाग - द्वितीय
3) श्री आर० के० थपलियाल,अधि0सर्वे0,तकनीकी अनुभाग - तृतीय
4) श्री अर्जुन सिंह, अधिकारी सर्वेक्षक, तकनीकी अनुभाग - प्रोत्साहन

4) **<u>हिन्दी में टिप्पण और आलेखन :-</u>**
(मिनिस्टीरियल संवर्ग के लिए)

1) श्री के० ए० सिद्दीकी, सहायक, स्था० प्रशा० एवं वेतन - प्रथम
2) श्री भगवान सिंह, सहायक स्थापना-३ - द्वितीय
3) श्री राजेश सिंह, सहायक, स्थापना-१ - तृतीय
4) श्री धीरज कुमार श्रीवास्तव, अ०श्रे०लि०, स0 अ0 - प्रोत्साहन

5) **<u>चित्र के आधार पर कहानी लेखन :-</u>**

1) श्री अनुज कुमार, खलासी, हिंदी अनुभाग - प्रथम
2) श्री बचन सिंह, खलासी, आर०टी०आई० अनुभाग - द्वितीय
3) श्री अर्जुन, खलासी, स्था० प्रशा एवं वेतन - तृतीय
4) श्रीमती सोमबाला, खलासी, बजट अनुभाग - प्रोत्साहन
5) श्री विशाल, सफाई कर्मचारी, सुरक्षा पर्यवेक्षक - प्रोत्साहन

6) **<u>हिन्दी में श्रुतलेख (डिक्टेशन) :-</u>**
(ग्रुप 'डी' के लिए)

1) श्री अतर सिंह, खलासी, गोपनीय अनुभाग - प्रथम

2) श्री अनुज कुमार, खलासी, हिंदी अनुभाग - द्वितीय
3) श्री नवीन्द्र कुमार, खलासी, गोपनीय अनुभाग - तृतीय
4) श्री राजेन्द्र सिंह, तकनीकी श्रमिक, तकनीकी अनुभाग - प्रोत्साहन
5) श्री विशाल, सफाई कर्मचारी, सुरक्षा पर्यवेक्षक - प्रोत्साहन

7) **<u>कंप्यूटर पर हिन्दी में वर्ड प्रोसेसिंग :-</u>**

1) श्री अमित कुमार वर्मा, प्र०श्रे०लि०, विधिक अनुभाग - प्रथम
2) श्री विपिन, प्र०श्रे०लि०, स्था० प्रशा० एवं वेतन - द्वितीय
3) श्री हर सिंह, प्र०श्रे०लि०, गोपनीय अनुभाग - तृतीय
4) श्री राजेश सिंह, सहायक, स्था०१ - प्रोत्साहन

कार्यालयीन हिंदी के वाक्यांश

01	A chronological summary of the case is placed below.	इस मामले का तारीखवार सारांश नीचे दिया है।
02	A revised draft memorandum is put as desired by.	की इच्छा अनुसार ज्ञापन का परिशोधित प्रारूप प्रस्तुत है।
03	A short history of the case under consideration is given .	विचाराधीन मामले का संक्षिप्त वृत्त दिया गया है।
04	Action may be taken as proposed.	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
05	Back to work.	काम पर लौटें ।
06	Background of the case.	मामले की पृष्ठभूमि
07	Budget provision exists.	बजट में ब्यवस्था है।
08	Charge handed over.	कार्यभार सौपा जाए ।
09	Consolidated report may be furnished.	समेकित रिर्पोट प्रस्तुत की जाए।
10	Delay in returning the file is regretted.	फाइल को लौटाने में हुई देरी के लिए खेद है।
11	Delay in the submission of the case is regretted.	मामले को प्रस्तुत करने में हुई देर के लिए खेद है ।
12	Discrepancy may be reconciled.	विसंगति का समाधान कर लिया जाए।
13	Do the needful.	आवश्यक कार्रवाई करें ।
14	Draft has been amended accordingly.	प्रारूप तदनुसार संशोधित कर दिया गया है ।
15	Draft reply is put up for approval.	उत्तर का प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है ।
16	Explanation may be called for.	स्पष्टीकरण मांगा जाए ।
17	Extracts from the notes will be kept on our file on return.	वापसी पर टिप्पणीयों के उद्धरण अपनी फाइल में रख लिए जाएगें ।
18	Follow up action.	अनुवर्ती कार्रवाई।

19	Issue reminder urgently.	तुरंत अनुस्मारक भेजिए।
21	Kindly acknowledge.	कृपया पावती भेजें ।
22	May be informed accordingly.	तदनुसार सूचित कर दिया जाए।
23	Needful has been done.	जरूरी कार्रवाई कर दी गई है ।
24	No assurance in the matter can be given at this stage.	इस मामले में इस समय कोई आश्वासन नहीं दिया जा सकता ।
25	No decision has so for been taken in the matter.	इस मामले पर अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ है।
26	No further action is called for.	आगे कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है।
27	Office may note it carefully.	कार्यालय इसे सावधानी से नोट कर लें ।
28	Please circulate and file.	कृपया सभी को दिखा कर फाइल कर दीजिए ।
29	Please see the proceeding note.	कृपया पिछली टिप्पणियां देख लें ।
30	Seen and return with thanks.	देखकर सधन्यवाद वापिस किया जाता है।
31	The bill is returned herewith with the following objection.	बिल निम्नलिखित आपत्तियों के साथ वापस किया जाता है ।
32	The proposal is self explanatory it may be accepted.	प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है ।
33	The required papers are placed below.	अपेक्षित कागज-पत्र नीचे रखे हैं ।
34	This may be kept pending till a decision is taken on the main file.	मुख्य फाइल पर निर्णय होने तक इसे रोके रखिए ।
35	This may please be treated as urgent.	कृपया इसे अविलंबनीय समझें
36	We have no remarks to offer.	हमें कोई टिप्पणी नहीं करनी है ।
37	Superannuation.	अधिवर्षिता ।
38	Indent.	मांगपत्र।
39	Cash memo.	नगद पर्ची
40	Dividend.	लाभांश

महासर्वेक्षक कार्यालय में राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर मंचासीन अधिकारीगण ।

राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर सरस्वती वंदना प्रस्तुत करती केन्द्रीय विद्यालय नं0- 2 की छात्राएं ।

महासर्वेक्षक कार्यालय में हिन्दी समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए श्री बी0 पी0 नैनवाल अपर महासर्वेक्षक ।

राजभाषा पुरस्कार वितरण एवं सांस्कृतिक समारोह के अवसर पर उपस्थित महासर्वेक्षक कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण ।

हिन्दी समारोह के अवसर पर महासर्वेक्षक कार्यालय की पत्रिका 'सर्वेक्षण दर्पण' अंक-10 का विमोचन करते हुए डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव एवं अन्य अधिकारीगण ।

ग्रुप 'ए' अधिकारियों के लिए हिन्दी श्रुतलेख प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर भारत के महासर्वेक्षक से पुरस्कार प्राप्त करती श्रीमती जसपाल कौर प्रद्योत, निदेशक (प्रशासन एवं वित्त) ।

राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर उपस्थित अधिकारियों तथा कर्मचारियों को संबोधित करते हुए भारत के महासर्वेक्षक डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव ।

राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर डिजिटल बोर्ड का शुभांरभ करते हुए वरिष्ठ अधिकारीगण ।

हिन्दी टिप्पण और आलेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर श्री बी०पी० नैनवाल, अपर महासर्वेक्षक से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री के०एस० सिद्दीकी ।

वर्ष 2012-2013 के दौरान हिन्दी में सर्वोत्तम कार्य करने के लिए स्थापना - 3 अनुभाग को चल वैजयंती प्रदान करते हुए भारत के महासर्वेक्षक डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव ।

सचिव, राजभाषा विभाग, सुश्री नीता चौधरी की नराकास अध्यक्ष तथा कार्यालय प्रमुखों के साथ समीक्षा बैठक में श्री बी०पी० नैनवाल, अपर महासर्वेक्षक पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए ।

सचिव, राजभाषा विभाग सुश्री नीता चौधरी के साथ विचार-विमर्श करते महासर्वेक्षक कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारीगण ।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अधिकारियों /कर्मचारियों को संबोधित करते हुए भारत के महासर्वेक्षक डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव ।

पर्यावरण अभियान के तहत ग्रेट आर्क पार्क में वृक्षारोपण करते भारत के महासर्वेक्षक डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव ।

चैन्ने ऑफिस काम्प्लैक्स की भूमि का शिलान्यास करते हुए, सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार, भारत के महासर्वेक्षक डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव एवं अधिकारीगण।

इंडो-भूटान सीमा वार्ता के अवसर पर भारत के महासर्वेक्षक डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव ।

प्रगति मैदान में नई दिल्ली के गाइड मैप का लोकार्पण करते हुए सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार, टी॰ रामासामी, भारत के महासर्वेक्षक डॉ॰ स्वर्ण सुब्बा राव एवं अधिकारी गण ।

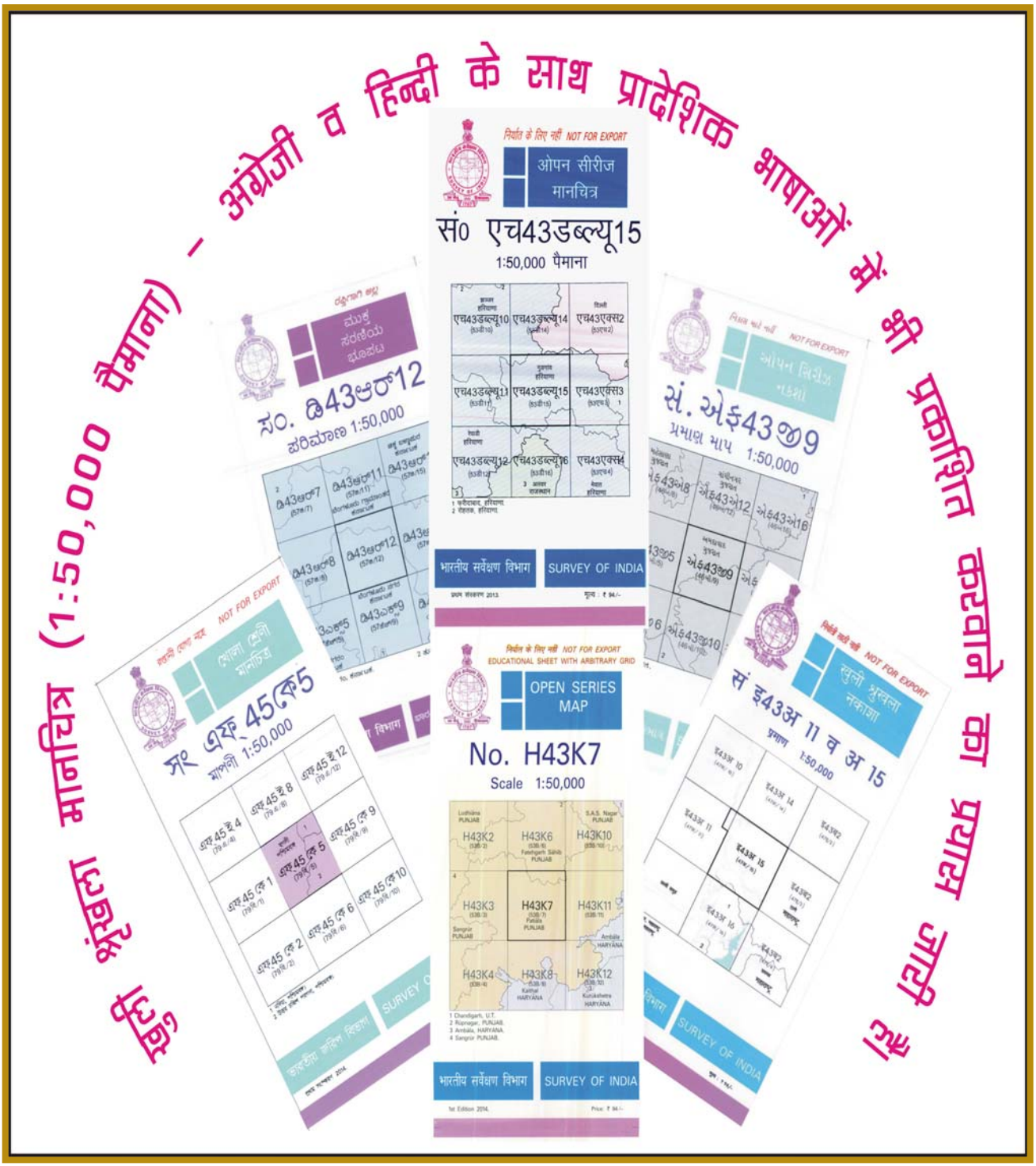

खुली श्रृंखला मानचित्र (1:50,000 पैमाना) - अंग्रेजी व हिन्दी के साथ प्रादेशिक भाषाओं में भी प्रकाशित करवाने का प्रयास जारी है
निर्यात के लिए नहीं NOT FOR EXPORT
ओपन सीरीज मानचित्र
सं0 एच43डब्ल्यू15
1:50,000 पैमाना
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA
સં. એફ43જી9
પ્રમાણ માપ 1:50,000
सं इ43अ 11 व अ 15
खुली श्रृंखला नकाशा
NOT FOR EXPORT
EDUCATIONAL SHEET WITH ARBITRARY GRID
OPEN SERIES MAP
No. H43K7
Scale 1:50,000
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA